mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-29 अंक-39 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

09 फरवरी 2025 रविवार

दैनिक मीडिया ऑडीटर

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

राष्ट्रीय खेलों में.. @ पेज 7

उद्धव का एकनाथ को चैलेंज, 'एक भी सांसद तोड़ के दिखाओ'

अयोध्या (एजेंसी)। शिवसेना यूबीटी के प्रमुख उद्धव ठाकरे ने आज मुंबई में पार्टी के नेता और विधान परिषद में नेता विपक्ष अम्बादास दानवे के किताब विमोचन समारोह में %ऑपरेशन टाइगर%

● महाराष्ट्र में महायुती को मिली जीत के मुद्दे पर जमकर हमला बोला

और महाराष्ट्र में महायुती को मिली जीत के मुद्दे पर जमकर हमला बोला। बता दें कि शिवसेना के नेता उदय सामंत ने दावा किया है कि उद्धव ठाकरे की शिवसेना के कई विधायक और सांसद एकनाथ शिंदे की शिवसेना के संपर्क में हैं और जल्द ही पार्टी में एक बड़ी फूट पड़ने वाली है। वहीं, अब उद्धव ठाकरे ने चैलेंज किया है कि कोई उनके एक भी सांसद तो तोड़कर दिखाए।

उद्धव ठाकरे ने महायुति पर निशाना साधते हुए कहा कि जैसे हमे पराजय स्वीकार नहीं, वैसे ही लगता है कि उन लोगों को जीत भी स्वीकार नहीं। इतना बहुमत मिलने के बाद भी वे आपस में झगड़ रहे हैं। सीएम कौन बनेगा इसके लिए एक महीना लगा, फिर मंत्री पद, फिर पालक मंत्री पद को लेकर झगड़ रहे हैं। उद्धव ने कहा- ÷आज सुबह में खबरे प्लांट की शिवसेना के छह सांसद फूटेंगे। पर मैं कहता हूँ एक भी फोड़ कर दिखाओ, फ़ुटेगा तो आपका सिर।÷ उद्धव ने कहा कि वे बोल हे हैं कि मैंने हिंदुत्व छोड़ा, एक उदाहरण बताये कि मैंने कब हिंदुत्व छोड़ा।

उद्धव ठाकरे ने राहुल गांधी की आज की प्रेस कॉन्फ्रेंस पर भी बात की। उन्होंने कहा- ÷आज राहुल गांधी ने फिर कहा कि इतने मतदाता कैसे बढ़े। पाँच महीने में कैसे इतने मतदाता बढ़ सकते है? आज की पीसी में हमने ईवीएम की बात नहीं की पर जो फ़र्जी वोटर आपने घुसाये वह बात हम उठा रहे हैं। उन्होंने क्या किया? लोकसभा चुनाव का अभ्यास किया जिस वार्ड में कम वोट मिले उस वार्ड में यह मतदाता घुसाये। जैसे उन्होंने मेरी पार्टी फोड़ी वैसे ये मेरे देश के लोकतंत्र की इस तरह से हत्या कर रहे हैं।

उद्धव ठाकरे ने राहुल गांधी द्वारा लगाए आरोपों का समर्थन किया और कहा- ÷आज भी राहुल गांधी ने बताया कि कैसे मतदाता बढ़े। पांच साल में 32 लाख और पाँच महीने में 40 लाख, क्या यह संभव है ? और इस आरोप पर हमारे मुख्यमंत्री ने भी प्रतिक्रिया दी और कहा यह चुटकुला है। चुटकुला? अगर एक चुटकुला बार-बार सुनाया तो हंसी नहीं आती। आपने लोकतंत्र की जो हत्या की है क्या आपको यह चुटकुला लगता है, मज़ाक है ये? आज के प्रेस कॉन्फ्रेंस में हमारी आपत्ति ईवीएम पर थी ही नहीं बल्कि आपने जो बोगस तरीक़े से मतदाता घुसाये बढ़ाएं उस पर थी।÷

ऑपरेशन टाइगर पर उद्धव ठाकरे ने एकनाथ शिंदे को चुनौती देते हुए कहा- ÷हिम्मत होगी, मर्द की औलाद होंगे तो मेरा एक भी शिवसैनिक तोड़ के दिखाएं। आज भी सुबह-सुबह ख़बरें फैलायी कि शिवसेना के छह से सात सांसद फुट रहे हैं।

संक्षिप्त समाचार

भारी लैंडस्लाइड्स से थर्राया दक्षिण-पश्चिमी चीन, 30 लोग लापता

बीजिंग (एजेंसी)। चीन भारी लैंड्स्लाइड से थर्रा उठा है। बताया जा रहा है कि दक्षिण-पश्चिमी चीन के सिचुआन प्रांत में शनिवार को दिल दहला देने वाला भूस्खलन हुआ है। जिसके कारण करीब 10 घर इसकी चपेट में आ गए हैं। इस घटना में 30 लोग लापता हो गए हैं, जिनकी तलाश की जा

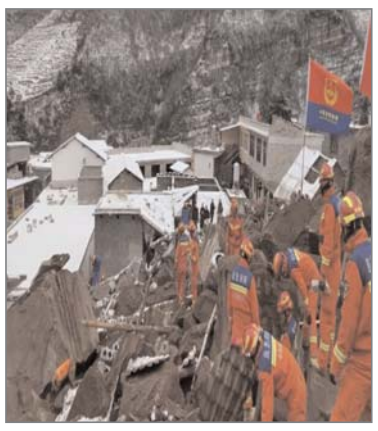

रही है। देश के सरकारी प्रसारक 'सीसीटीवी' द्वारा जारी खबर में बताया गया कि आपातकालीन प्रबंधन मंत्रालय ने जुनलियान काउंटी में भूस्खलन के बाद अग्निशमनकर्मियों सहित सैकड़ों बचावकर्मियों को तैनात किया है जिसके बाद मलबे में दबे दो लोगों को जीवित बाहर निकाला गया। अन्य लोगों की तलाश में टीमें जुटी हुई हैं। लोगों को जल्द से जल्द रेस्क्यू करने का प्रयास किया जा रहा है। चीन की सरकारी समाचार एजेंसी 'शिन्हुआ' द्वारा जारी खबर में बताया गया कि राष्ट्रपति शी चिनफिंग ने अधिकारियों से लापता लोगों की तलाश करने तथा लोगों को बचाने के लिए हरसंभव प्रयास करने का निर्देश दिया है। इसके अनुसार, चीन के प्रधानमंत्री ली कियांग ने आस-पास के क्षेत्रों में संभावित भूवैज्ञानिक खतरों की जांच और निरीक्षण करने के लिए कहा है।

अमेरिका में यौन उत्पीड़न के आरोप में भारतीय नागरिक गिरफ्तार

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। अमेरिका में यौन उत्पीड़न से संबंधित आरोपों के सिलसिले में इमिग्रेशन अधिकारियों ने एक भारतीय नागरिक सहित चार लोगों को गिरफ्तार किया है। भारतीय नागरिक

जसपाल सिंह को 29 जनवरी को वाशिंगटन के तुकविला में गिरफ्तार किया गया था। अमेरिकी इमिग्रेशन एवं सीमा शुल्क प्रवर्तन विभाग(आईसीई)-सिएटल ने पिछले सप्ताह एक विज्ञप्ति में कहा था कि जसपाल सिंह पर 'यौन उत्पीड़न ' का आरोप लगाया गया है। गिरफ्तार किए गए अन्य व्यक्ति मेक्सिको, ग्वाटेमाला और अल साल्वाडोर के नागरिक हैं। गिरफ्तारी के बाद अब निष्कासन की कार्रवाई तक सभी चार लोग आईसीई की हिरासत में रहेंगे। आईसीई प्रवर्तन एवं निष्कासन परिचालन सिएटल फील्ड कार्यालय के निदेशक डू बोस्टॉक ने कहा, ''हमारे समुदायों की सुरक्षा करना, आगे और अधिक उत्पीड़न को रोकना प्रशांत उत्तर-पश्चिम में आईसीई के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। ये गिरफ्तारियां इस संदेश को पुष्ट करती हैं कि अवैध आपराधिक तत्वों की मौजूदगी बर्दाश्त नहीं की जाएगी।'' बता दें कि, राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने दूसरे कार्यकाल की शुरुआत एक महत्वाकांक्षी आव्रजन एजेंडे के साथ की है, जिसके तहत उन्होंने लाखों अवैध अप्रवासियों को निर्वासित करने और अमेरिका की दक्षिणी सीमा को सील करने का वादा किया है।

नोएडा एयरपोर्ट से सीधे जा सकेंगे उत्तराखंड

नोएडा (एजेंसी)। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट ने शुक्रवार को घोषणा की कि उत्तराखंड परिवहन निगम के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया है, जिससे एयरपोर्ट से पहाड़ी राज्य के प्रमुख स्थलों तक निर्बाध बस सेवा उपलब्ध हो सकेगी।

नोएडा एयरपोर्ट पर इस ग्रीष्मकाल में यात्रियों के लिए उड़ानें शुरू हो जाएंगी। जब एयरपोर्ट पर परिचालन शुरू हो जाएगा तब उत्तराखंड परिवहन निगम, नोएडा एयरपोर्ट को देहरादून, ऋषिकेश, हरिद्वार और हल्द्वानी सहित उत्तराखंड के प्रमुख स्थलों तक निर्बाध बस सेवाएं उपलब्ध कराएगा। एक आधिकारिक बयान में कहा गया कि यह पहल क्षेत्रीय संपर्क बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है और इससे यात्री आसानी और सुविधाओं के साथ अपने गंतव्यों तक पहुंच पाएंगे। उत्तराखंड परिवहन निगम के प्रबंध निदेशक ने कहा, ''हमें नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के साथ अपनी रणनीतिक साझेदारी की घोषणा करते हुए गर्व है, जो नोएडा और देहरादून, ऋषिकेश, हरिद्वार और हल्द्वानी जैसे प्रमुख शहरों के बीच क्षेत्रीय संपर्क बढ़ाने की दिशा में एक परिवर्तनकारी कदम है। यह सहयोग हवाई और सड़क परिवहन को निर्बाध रूप से एकीकृत करेगा, जिससे यात्रियों को एक सहज और कुशल यात्रा अनुभव प्राप्त होगा।'' नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट से व्यावसायिक उड़ानों के लिए टिकट बुकिंग सेवा मार्च के बाद से शुरू होने की खबर है। फिलहाल, फरवरी के दूसरे सप्ताह से टिकट बुकिंग सेवा शुरू करने की तैयारी पर ब्रेक लग गया है। क्योंकि, व्यावसायिक उड़ानें शुरू करने के लिए नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) से एयरोड्रम लाइसेंस अभी तक नहीं मिला है। लिहाजा, मार्च तक इसका लाइसेंस मिलने की उम्मीद है। लाइसेंस मिलने के बाद ही अंतर्राष्ट्रीय, घरेलू और कार्गो फ्लाइट के लिए टिकट बुकिंग सेवा शुरू हो सकेगी।

67 सीटों पर जमानत जब्त

दिल्ली में लगातार तीसरी बार कांग्रेस 'शून्य'

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा चुनाव के परिणाम सामने आ चुके हैं। भारतीय जनता पार्टी ने 27 साल बाद दिल्ली में सत्ता हासिल कर ली है। वहीं, आम आदमी पार्टी की 10 साल की सत्ता समाप्त हो गई है। भाजपा ने दिल्ली की 70 में से 48 सीटें जीती तो वहीं, आम आदमी पार्टी 22 सीटों पर सिमट गई। अगर बात कांग्रेस की करें तो दिल्ली में लगातार तीसरी बार विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को 0 सीटें हासिल हुई हैं। बड़ी बात ये भी है कि दिल्ली की 70 में 67 सीटों पर कांग्रेस की जमानत जब्त हो गई है। आइए जानते हैं वो कौन की 3 सीटें हैं जहां कांग्रेस की जमानत बची।

कांग्रेस इस बार के विधानसभा चुनाव में कुल 70 में से सिर्फ तीन सीटों पर ही अपनी जमानत बचा सकी और लगातार तीसरी बार चुनाव में उसका खाता तक नहीं खुला। हालांकि, कांग्रेस ने वोट हिस्सेदारी में दो प्रतिशत से अधिक की बढ़ोतरी की है। उसने करीब 6.4 प्रतिशत वोट हासिल किए, जबकि 2020 के विधानसभा चुनाव में उसे 4.26 प्रतिशत वोट मिले थे। बता दें कि दिवंगत नेता शीला दीक्षित के नेतृत्व में कांग्रेस ने लगातार तीन चुनाव 1998 (52 सीटें), 2003 (47 सीटें), और 2008 (43 सीटें) में दिल्ली में जीत हासिल की थी और 15 साल तक सत्ता में रही थी। हालांकि, इसके बाद दिल्ली में कांग्रेस का ग्राफ गिरता चला गया।

इन सीटों पर बची जमानत: बादली सीट पर दिल्ली कांग्रेस के अध्यक्ष देवेंद्र यादव को कुल 41071 वोट मिले। यहां वह तीसरे नंबर पर रहे। उन्हें 27 प्रतिशत से ज्यादा वोट मिले।

कस्तूरबा नगर विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस उम्मीदवार अभिषेक दत्त दूसरे स्थान पर भी रहे। दत्त ने 27019 वोट हासिल किए। उन्हें करीब 32 प्रतिशत वोट हासिल हुए।

नांगलोई जाट सीट पर कांग्रेस पार्टी के उम्मीदवार रोहित चौधरी ने 32028 वोट और करीब 20 प्रतिशत वोट शेयर हासिल किया। वह तीसरे नंबर रहे।

जानकारी के लिए बता दें कि चुनाव में अगर किसी उम्मीदवार को डाले गए कुल वोटों का कम से कम छठा हिस्सा नहीं प्राप्त होता है तो जमानत स्वरूप उसके द्वारा चुनाव आयोग के समक्ष दी गई राशि जब्त हो जाती है।

हेडमास्टर ड्रिंक कर स्कूल पहुंचे, नशे में झूमने का वीडियो वायरल

मुजफ्फरपुर (एजेंसी)। बिहार में कहने को तो शराबबंदी है लेकिन जो तस्वीर सामने आयी है लगता नहीं है कि बिहार में शराबबंदी है। मुजफ्फरपुर जिला के औराई प्रखंड के राजकीय प्राथमिक विद्यालय विशुनपुर में हेडमास्टर जगदीश नशे में टुल्ल होकर स्कूल पहुंचे। हेडमास्टर साहब के नशे में झूमते हुए का वीडियो किसी ने बना लिया और वायरल कर दिया। जब लोगों ने हेडमास्टर जगदीश से शराब पीने की बात पूछा तो उन्होंने साफ तौर पर कहा कि मैं छुट्टी पर हूं। अगर हेड मास्टर साहब छुट्टी पर हैं तो फिर बिहार में शराब पीना उनके लिए कोई बड़ी बात नहीं है। हालांकि इस वायरल वीडियो की पुष्टि हम नहीं करते हैं लेकिन वायरल वीडियो में साफ तौर पर देखा जा सकता है कि किस तरह एक सरकारी स्कूल के हेड मास्टर साहब नशे में टल्ली हैं। हेडमास्टर साहब नशे में धूत होकर स्कूल पहुंचे थे जिसकी भनक वहां के स्थानीय लोगों के साथ-साथ एक छात्र नेता को लग गई।

'आप' की हार पर भड़के राम गोपाल, बोले- कांग्रेस ने बीजेपी को जिताया

10 सालों से दिल्ली की सत्ता पर काबिज आम आदमी पार्टी की विदाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा चुनाव के परिणाम सामने आ चुके हैं। 5 फरवरी को दिल्ली की 70 विधानसभा सीटों के लिए वोटिंग हुई थी जिसके परिणाम आज शनिवार 8 फरवरी को जारी कर दिए गए हैं। भारतीय जनता पार्टी ने दिल्ली के चुनाव में बहुमत हासिल कर लिया है। वहीं, 10 सालों से दिल्ली की सत्ता पर काबिज आम आदमी पार्टी की विदाई हो गई है। अब आम आदमी पार्टी की हार को लेकर समाजवादी पार्टी के सांसद राम गोपाल यादव ने कांग्रेस पर निशाना साधा है। आपको बता दें कि सपा ने दिल्ली विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी को समर्थन दिया था। दिल्ली विधानसभा चुनाव नतीजों को लेकर समाजवादी पार्टी के सांसद राम गोपाल यादव ने कांग्रेस पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि भाजपा को ज्यादा खुश नहीं होना चाहिए। कांग्रेस ने भाजपा को जिताने में लगी हुई थी और आम आदमी पार्टी को हराने में लगी हुई थी।

दिल्ली विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी 48 सीटों पर जीत हासिल करते हुए दिखाई दे रही है। वहीं, आम आदमी पार्टी को 22 सीटों पर जीत मिलती दिख रही है। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक और दिल्ली के पूर्व सीएम खुद चुनाव हार गए हैं। इसके साथ ही मनीष सिसोदिया को भी चुनाव में हार मिली है। सौरभ भारद्वाज भी चुनाव हार गए हैं। आम आदमी पार्टी की हार पर माकपा और इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग (आईयूएमएल) ने निराशा व्यक्त की है और कहा है कि विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' में मतभेदों ने राष्ट्रीय राजधानी में भाजपा के अच्छे प्रदर्शन का मार्ग प्रशस्त किया है।

यूपी के मिल्कीपुर में बीजेपी की शानदार जीत

बीजेपी नेता चंद्रभानु पासवान ने हासिल की जीत

मिल्कीपुर (एजेंसी)। यूपी के मिल्कीपुर उपचुनाव में बीजेपी को शानदार जीत हासिल हुई है और सपा को हार का सामना करना पड़ा है। मिल्कीपुर में बीजेपी उम्मीदवार चंद्रभानु पासवान को 146397 वोट मिले और उन्होंने 61710 वोटों से ये चुनाव जीत लिया है। दूसरे नंबर पर समाजवादी पार्टी के अजीत प्रसाद रहे। उन्हें 84687 वोट मिले हैं। तीसरे नंबर पर आजाद समाज पार्टी के संतोष कुमार रहे, उन्हें कुल 5459 वोट मिले।

चंद्रभानु पासवान पासी समाज से आते हैं और 2 साल से मिल्कीपुर सीट पर काफी सक्रिय थे। वह रुदौली से दो बार जिला पंचायत सदस्य रहे हैं और वर्तमान में उनकी पत्नी जिला पंचायत सदस्य हैं। इनका पूरा परिवार साड़ी के व्यापार में लगा हुआ है। चंद्रभानु बीजेपी की जिला इकाई में कार्य समिति के भी सदस् रहे और 2024 के लोकसभा चुनाव में अनुसूचित जाति संपर्क प्रमुख रहे। उनके पिता बाबा रामलखन दास ग्राम प्रधान हैं।

चंद्रभानु को अपने घर से ही राजनीतिक अनुभव मिला है और उनका परिवार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से भी जुड़ा रहा है। चंद्रभानु पासवान ने बीकॉम, एमकॉम और एलएलबी की डिग्री हासिल की है।

मिल्कीपुर में कुल 3 लाख 58 हजार वोटर हैं, जिसमें सबसे अधिक संख्या अनुसूचित जाति और फिर पिछड़े वर्ग की है। यहां पासी समाज और ओबीसी वर्ग में यादवों का सबसे ज्यादा प्रभाव है। इस सीट से साल 2022 के विधानसभा चुनाव में सपा के अवधेश प्रसाद जीते थे लेकिन 2024 के लोकसभा चुनाव में अवधेश अयोध्या सीट जीतकर सांसद बन गए। जिसकी वजह से उन्हें विधायकी से इस्तीफा देना पड़ा। इसी वजह से इस सीट पर उपचुनाव हुआ।

हालांकि समाजवादी पार्टी को पूरा विश्वास था कि वह इस सीट को जीत लेगी लेकिन बीजेपी ने उसे करारा झटका देते हुए इस सीट पर अपनी जीत की मुहर लगा दी।

दिल्ली चुनावों में इस नेता को मिले सबसे ज्यादा वोट

दिल्ली में कुछ नए सितारे भी उभरे हैं जिनमें से मटियाला सीट से जीत दर्ज करने वाले संदीप सहरावत भी एक हैं

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी ने दिल्ली विधानसभा चुनाव में शानदार प्रदर्शन करते हुए शनिवार को आम आदमी पार्टी को राष्ट्रीय राजधानी की सत्ता से बाहर कर 27 साल बाद धमाकेदार वापसी की। आम आदमी पार्टी के नेता और पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया, मंत्री सौरभ भारद्वाज सहित सत्तारूढ़ दल के कई अन्य प्रमुख नेता चुनाव हार गए हैं। इस बीच दिल्ली में कुछ नए सितारे भी उभरे हैं जिनमें से मटियाला सीट से जीत दर्ज करने वाले संदीप सहरावत भी एक हैं। संदीप ने 2025 के दिल्ली विधानसभा चुनावों में सबसे ज्यादा वोट पाने का गौरव हासिल किया है।

मटियाला से भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर चुनाव लड़ रहे 32 वर्षीय संदीप सहरावत ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी आम आदमी पार्टी के सुमेश शोकीन को 28723 मतों के बड़े अंतर से मात दी। संदीप को कुल मिलाकर 146295 वोट मिले जबकि शोकीन 117572 वोट ही जुटा पाए। वहीं, कांग्रेस के रघविंदर सिंह को मात्र 9685 वोट ही मिल पाए। संदीप को मिले 146295 वोट मौजूदा विधानसभा चुनाव में किसी भी प्रत्याशी को मिले सबसे ज्यादा वोट हैं। बता दें कि संदीप अभी काफी युवा हैं और दिल्ली में ही बहुत सारे लोगों ने उनका नाम तक नहीं सुना होगा। लेकिन इन चुनावों में सबसे ज्यादा वोट हासिल कर उन्होंने अपनी पहचान बनाने की शुरुआत कर दी है।

बता दें कि मटियाला विधानसभा सीट को आम आदमी पार्टी ने 2015 में बीजेपी से छीन लिया था। उन चुनावों में,क प्रत्याशी गुलाब सिंह यादव ने तत्कालीन विधायक एवं बीजेपी प्रत्याशी राजेश गहलोत को 47 हजार से भी ज्यादा मतों के अंतर से हराया था। इसके बाद 2020 के विधानसभा चुनावों में भी इस सीट पर,क्प्रत्याशी गुलाब की जीत हुई थी और उन्हें एक बार फिर राजेश गहलोत के 28 हजार से भी ज्यादा मतों के अंतर से मात दी थी। हालांकि 2025 में 32 साल के संदीप ने बाजी पलट दी और,क्क प्रत्याशी को मात देकर मटियाला सीट पर एक बार फिर भगवा परचम लहरा दिया।

दिल्ली के एकमात्र ट्रांसजेंडर प्रत्याशी को कितने वोट मिले?

नई दिल्ली (एजेंसी)। राजधानी दिल्ली में विधानसभा चुनाव संपन्न हो चुका है। पांच फरवरी को हुई वोटिंग की गिनती आज 8 फरवरी को हुई। इस चुनाव में बीजेपी ने पूर्व बहुमत के साथ सरकार बनाई है। दिल्ली के इस विधानसभा चुनाव में सिर्फ एक ट्रांसजेंडर प्रत्याशी ने चुनाव लड़ा था। हालांकि इस ट्रांसजेंडर प्रत्याशी को हार का सामना करना पड़ा, लेकिन इस प्रत्याशी को कितने वोट मिले ये जानते हैं। दरअसल, दिल्ली विधानसभा चुनाव में एकमात्र ट्रांसजेंडर उम्मीदवार राजन सिंह ने कालकाजी विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ा था। इस चुनाव में उन्हें 85 वोट मिले हैं। इस सीट पर 556 लोगों ने 'नोटा' का विकल्प चुना है। चुनाव आयोग की तरफ से ये आंकड़े जारी किए गए हैं। दिल्ली के एकमात्र ट्रांसजेंडर प्रत्याशी राजन सिंह (27) ने आम जनता पार्टी (इंडिया) के टिकट पर कालकाजी से चुनाव लड़ा था। इसी सीट पर आम आदमी पार्टी (आप) की उम्मीदवार और दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी भी चुनाव लड़ रही थीं। वहीं भाजपा ने यहां से रमेश बिधूड़ी को टिकट दिया था। बता दें कि दिल्ली की कालकाजी विधानसभा सीट पर आम आदमी पार्टी की प्रत्याशी आतिशी ने 3,521 वोटों के अंतर से जीत हासिल की। आम आदमी पार्टी की प्रत्याशी आतिशी को 52154 वोट मिले, जबकि भाजपा के प्रत्याशी रमेश बिधूड़ी को 48633 वोट मिले। इस चुनाव में कांग्रेस की अलका लांबा 4392 वोट के साथ तीसरे स्थान पर रहीं। ट्रांसजेंडर प्रत्याशी राजन सिंह आठवें स्थान पर रहे। कालकाजी विधानसभा क्षेत्र में कुल 1,94,515 पंजीकृत मतदाता हैं, जिनमें 1,06,893 पुरुष मतदाता, 87,617 महिला और पांच ट्रांसजेंडर मतदाता हैं।

दुःखद है इंदौर जिले की सड़क दुर्घटना - मुख्यमंत्री डॉ. यादव

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इंदौर जिले में शुक्रवार को हुई सड़क दुर्घटना पर दुःख व्यक्त किया है। इंदौर जिले के थाना मानपुर में हुई सड़क दुर्घटना में दिवंगत नागरिकों के परिजन की सहायता एवं घायलों के समुचित उपचार के निर्देश जिला प्रशासन को दिए गए हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बाबा महाकाल से दुर्घटना में दिवंगत आत्माओं की शांति और उनके शोकाकुल परिजन को यह दुःख सहन करने की शक्ति देने की प्रार्थना की है। उन्होंने घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना भी की है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कामेश्वर चौपाल के निधन पर दु.ख व्यक्त किया

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने वरिष्ठ नेता एवं राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास, अयोध्या के न्यासी श्री कामेश्वर चौपाल के निधन पर दुःख व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राम मंदिर से जुड़े प्रसंग में श्री कामेश्वर चौपाल की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उनकी सेवाएं सदैव हमें प्रेरित करती रहेंगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बाबा महाकाल से दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान देने और परिजन को यह गहन दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है।

मध्य प्रदेश पदक तालिका में टॉप 4 में बरक़रार

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उत्तराखंड नेशनल गेम्स 2025 में आज का दिन भी मध्य प्रदेश के लिए पदकों से भरा रहा7 मध्य प्रदेश की स्टार प्लेयर दिव्या पवार ने आज बॉक्सिंग में अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए स्वर्ण पदक अपने नाम किया। उन्होने बॉक्सिंग बैंटम महिला वर्ग में यह स्वर्ण पदक जीत कर मध्य प्रदेश के नाम ऐतेहासिक जीत दर्ज की। बाक्सिंग में ही मेंस हैवी वेट में मध्य प्रदेश के खिलाडी पारस ने कड़ी टक्कर के साथ रजत पदक अपने नाम किया। बॉक्सिंग में ही मेंस फैदर वेट में हिमांशु श्रीवास, विमेंस फैदर वेट में माहि लामा और विमेंस फ्लायवेट में मलिका मोर ने शानदार प्रदर्शन करते हुए कांस्य पदक अपने नाम किया। खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री सारंग ने सभी पदक विजेता खिलाडियों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है। साथ ही उन्होंने खिलाडियों को अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखने के लिए शुभकामनायें दीं। उन्होंने दिव्या पवार की स्वर्णिम उपलब्धि पर हार्दिक बधाई देते हुए कहा की इनकी जीत पूरे मध्यप्रदेश को गौरवान्वित कर रही है।मध्य प्रदेश ओलंपिक संघ के अध्यक्ष रमेश मेंदोला, सचिव दिग्विजय सिंह और संचालक खेल रवि कुमार गुप्ता ने भी खिलाड़ियों को उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए बधाई दी। मध्य प्रदेश के खिलाड़ी कल शूटिंग (शॉटगन), ताइक्वांडो, जिमनास्टिक, हैंडबॉल, एथलेटिक्स, मॉडर्न पेंटाथलान, और हॉकी में पदक के लिए अपनी दावेदारी पेश करेंगे।

राज्य मुक्त स्कूल शिक्षा बोर्ड की आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश योजना

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने की अनुशंसा की गयी है। इसी अनुक्रम में स्कूल शिक्षा विभाग के अंतर्गत संचालित मध्यप्रदेश राज्य मुक्त स्कूल शिक्षा बोर्ड ने आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश योजना प्रारंभ की है। योजना के अंतर्गत महत्वाकांक्षी पायलेट प्रोजेक्ट प्रारंभ किया गया है। पायलेट प्रोजेक्ट के अंतर्गत हैण्डलूम, हैण्डीक्रॉफ्ट, माटीकला, सोलर एनर्जी, परिधान निर्माण, बाँस कला इत्यादि क्षेत्रों में रोजगारमूलक प्रशिक्षण प्रारंभ किये गये हैं। शाजापुर जिले में कौशल विकास के लिये राज्य स्तरीय उत्कृष्टता केन्द्र की स्थापना की गयी है। कौशल केन्द्रों के माध्यम से मास्टर ट्रेनर्स तैयार किये जा रहे हैं। शुजालपुर नगर का बेम्बू, सिरामिक क्षेत्र में पायलेट परियोजना में चयन किया गया है। इस क्षेत्र के 20 विद्यार्थियों को बेम्बू एण्ड केन डेव्हलपमेंट इंस्टीट्यूट त्रिपुरा के अगरतला में एक माह का प्रशिक्षण दिलाया गया है। प्रशिक्षण का सारा खर्च मध्यप्रदेश राज्य मुक्त स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा वहन किया गया। राज्य स्तरीय कौशल विकास केन्द्र शुजालपुर में 30म15 मीटर के एक शेड का निर्माण किया गया है, जिसमें बेम्बू प्रोसेसिंग की 36 मशीन लगायी गयी हैं। चयनित हितग्राहियों को बेम्बू कार्य का प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है।

स्वभाव स्वच्छता संस्कार स्वच्छता अभियान 13 फरवरी को

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सहकारिता मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग के निर्देश पर अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष-2025 के अवसर पर सहकारिता के महत्व के प्रति लोगों को जागरूकता लाने के लिये विभाग के तहत सभी स्तर के विभागीय कार्यालय, सहकारी संस्थाओं में 13 फरवरी को स्वभव स्वच्छता संस्कार स्वच्छता अभियान के तहत स्वच्छता दिवस कार्यक्रम मनाया जायेगा। इस संबंध में आयुक्त सहकारिता एवं पंजीयक सहकारी संस्थाऐं ने परिपत्र जारी किया है। सभी शीर्ष संस्थाओं के प्रबंध संचालक, संभाग/जिला के संयुक्त/उप/सहायक आयुक्त सहकारिता और जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित के मुख्य कार्यपालन अधिकारी के नाम जारी परिपत्र में कहा गया है कि इस कार्यक्रम के अंतर्गत विभाग एवं संस्थाओं में कार्यालयीन नस्तियों को व्यवस्थित करना, पुराने रिकार्ड के बस्तों में संदर्भ अंकित होना, कार्यालय में इंडेक्स रजिस्टर का संधारण जिसकी मदद से पूर्ण परिसमापन, वैधानिक कार्यवाही, स्थापना आदि के विगत 10 वर्षों के विवरण तत्काल ज्ञात किये जा सकें, जैसे काम हों। साथ ही शौचालयों की सफाई एवं कार्यालयीन कक्षों में रोशनी एवं साज-सज्जा की जायें।

जनता की अपेक्षा की कसौटी पर खड़ा उतरना ही हमारा लक्ष्य-राज्य मंत्री गौर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने कहा कि जनता की अपेक्षा की कसौटी पर खड़ा उतरना ही उनका लक्ष्य है। उन्होंने यह बात शुक्रवार को मिसरोद के वार्ड 52 में एक करोड़ 20 लाख रुपए की लागत से होने वाले विभिन्न विकास कार्यों के भूमि-पूजन के अवसर पर कहीं। उन्होंने कहा कि मिसरोद मंडल की शीतल हाइट्स में पहले भी सड़क निर्माण के कार्य हो चुके हैं। अब जनता की मांग पर 19 लाख की लागत से डामरीकरण का कार्य कराया जा रहा है। कॉलोनी वासियों की जो भी अपेक्षा होगी, उसे हम पूरा करने का प्रयास करेंगे। इस क्षेत्र की सीवेज लाइन को भी अमृत योजना फेस टू से जोड़ा जाएगा। वार्ड 52 में मिसरोद ग्राम के पीछे शीतल हाइट्स में 19 लाख रुपए की लागत से सड़क के डामरीकरण के कार्य का भूमि-पूजन किया। राज्य मंत्री श्रीमती गौर ने रघुनाथ नगर में 12 लाख रुपए की लागत से डामरीकरण के कार्य का भूमि-पूजन और रोहित नगर फेस टू में 60 लाख की लागत से बनने वाली फोरलेन सीसी सड़क के निर्माण का भूमि-पूजन भी किया। रोहित नगर फेस- 2 में 8 लाख और 21 लाख रुपए की लागत से बनने वाली दो सीसी सड़क के निर्माण कार्यों का भी भूमि-पूजन किया। इस दौरान वार्ड की पार्षद श्रीमती शीला पाटीदार, मंडल अध्यक्ष श्रीमती मोनिका ठाकुर, जितेन्द्र शुक्ला, प्रताप वारे, श्रीमती अर्चना परमार, रामबाबू पाटीदार, जन-प्रतिनिधि एवं रहवासी मौजूद रहे।

जीवन को आनंद उत्सव की तरह जीयें

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मदद के भाव हमारी प्राचीन संस्कृति का हिस्सा हैं। जीवन को आनंद उत्सव की तरह जीयें और कार्य स्थल पर सकारात्मक सोच रखें। खाद्य आयुक्त श्री कर्मवीर शर्मा ने यह बात आनंद संस्थान द्वारा आयोजित तीन दिवसीय आनंदम सहयोगी कार्यशाला के समापन सत्र में कही। कार्यशाला में विभिन्न जिलों के अधिकारी-कर्मचारियों ने सहभागिता की। विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी खाद्य विभाग श्रीमती सुकृति सिंह एवं आनंद संस्थान के निदेशक श्री प्रवीण कुमार गंगराड़े ने आनंद संस्थान की अवधारणा और संस्थान की अलग-अलग गतिविधियों के बारे में बताया। तीन दिवसीय कार्यशाला को मास्टर ट्रेनर्स ने स्वयं के जीवन में बदलाव परिवर्तन के अनुभव साझा किए। जीवन का लेखा जोखा, रिश्ते, फ्रीडम गिलास जैसी विधियों और प्रेरक वीडियो फिल्म के माध्यम से प्रशिक्षण दिया गया। अल्प विराम कार्यक्रम शांत समय मौन की शक्ति का अनुभव प्रतिभागियों ने स्वयं किया। कार्यक्रम समन्वयक श्री प्रदीप मेहतो ने जीवन को बहती हुई नदी और निदेशक श्री सत्यप्रकाश आर्य ने आनंद को परिभाषित करते जीवन मूल्यों पर विस्तार से बताया।

मध्यप्रदेश राज्य कृषि विपणन बोर्ड के माध्यम से मिल रही किसानों को सुविधाएं

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। कृषि विकास मंत्री श्री एदल सिंह कंषाना ने कहा कि केन्द्र एवं राज्य शासन द्वारा किसानों के हित में अनेक कल्याणकारी योजनाएं लागू की गई हैं। किसान कल्याण एवं म.प्र. राज्य कृषि विपणन बोर्ड के अंतर्गत किसानों एवं व्यापारियों को अनेक सुविधाएं प्रदान की गई हैं।

एमपी फार्मगेट ऐप के माध्यम से किसान अपनी उपज को घर बैठे बेच सकते हैं। फ्लाइंग स्कॉट ऐप के माध्यम से अवैध व्यापार पर नियंत्रण और गोदामों के निरीक्षण के लिए व्यवस्था की गई है। राष्ट्रीय कृषि बाजार योजना (ई-नाम) कृषि मंडी समितियों से संबंधित उपजों के लिए सूचना और सेवाओं को प्रदान करती है। इलेक्ट्रॉनिक एक्सचेंज के माध्यम से स्पॉट ट्रेडिंग के लिए मध्यप्रदेश कृषि उपज मण्डी (एक से अधिक मण्डी क्षेत्रों के लिए विशेष अनुज्ञप्ति) नियमों में विशेष प्रावधान किये गये हैं। इससे व्यापारियों एवं किसानों को उपज विक्रय का अच्छा मूल्य प्राप्त करने में सीधा लाभ होगा। किसानों को फल-सब्जी विक्रय के लिए मण्डी प्रांगण के बाहर वैकल्पिक सुविधा उपलब्ध कराई गई है। प्रदेश की 259 कृषि उपज मण्डी समितियां में से 144 में इलेक्ट्रॉनिक तौल कांटे स्थापित किए गए हैं। राज्य सरकार किसानों की समृद्धि एवं खुशहाली के लिए निरंतर कार्य कर रही है। प्रदेश में मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना के तहत 81 लाख से अधिक किसानों को लाभ मिल रहा है।

तमिलनाडु ट्रांसमिशन कंपनी की एमडी सहित उच्च स्तरीय टीम ने किया एमपी ट्रांसको का दौरा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। तमिलनाडु पावर ट्रांसमिशन कंपनी की प्रबंध संचालक श्रीमती के. इंद्राणी के नेतृत्व में तमिलनाडु ट्रांसको की उच्च स्तरीय अधिकारियों की एक टीम ने मध्यप्रदेश पावर ट्रांसमिशन कंपनी के मुख्यालय जबलपुर का दौरा किया। तमिलनाडु ट्रांसमिशन कंपनी की प्रबंध संचालक श्रीमती के. इंद्राणी तथा एमपी ट्रांसको के प्रबंध संचालक इंजीनियर सुनील तिवारी सहित मुख्यालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने बैठक कर अपने-अपने संस्थानों में अपनाई जा रही बेस्ट प्रैक्टिसेस के बारे में चर्चा की। साथ ही तालमेल के साथ एक दूसरे की बेस्ट प्रेक्टिसेस पर अमल करने के लिए सैद्धांतिक सहमति व्यक्त की। तमिलनाडु ट्रांसको टीम की प्रबंध संचालक श्रीमती के. इंद्राणी ने स्काडा कंट्रोल सेंटर का दौरा कर उसकी कार्य प्रणाली का सूक्ष्मता से अध्ययन किया।

उन्होंने कहा कि एमपी ट्रांसको का यह बेहतरीन स्काडा सेंटर नेटवर्क स्टडी और सिस्टम मॉनिटरिंग के लिए सटीक टूल है। स्काडा कंट्रोल सेंटर जबलपुर में उपलब्ध सुविधाओं को उत्कृष्ट बताते हुए तमिलनाडु ट्रांसमिशन कंपनी के मुख्य अभियंता ग्रिड ऑपरेशन श्री विजय ने मध्यप्रदेश की तीनों डिस्काम कंपनियों की डिमांड एक स्थान पर मॉनिटर करने की व्यवस्था को अद्भुत बताते हुए कहा कि 33 केव्ही लेवल की स्काडा से मानिटरिंग करना एक बेहद सराहनीय उपलब्धि है। टीम ने मध्यप्रदेश द्वारा अपनाई गई टी. बी. सी. बी. (टेरिफ बेस्ड काम्पटीटिव बिडिंग) और एस. टी. यू. (स्टेट ट्रांसमिशन यूटिलिटी)की कार्य प्रणाली को भी समझा।

स्वनिर्मित नवीन तकनीक पर आधारित ऑटोकट ऑफ ट्रांसफार्मर बने वरदान

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी क्षेत्रांतर्गत स?माल ट्रांसफार्मर रिपेयरिंग यूनिट (एसटीआरयू) में स्वनिर्मित नवीन तकनीकी का उपयोग कर बनाए गए ऑटो कटऑफ वितरण ट्रांसफार्मर कंपनी के लिए वरदान साबित हो रहे हैं। इन ऑटो कटऑफ ट्रांसफार्मर्स से एक ओर जहां बिजली चोरी पर अंकुश लगा है वहीं दूसरी ओर विद्युत उपभोक्ताओं को बिना रूकावट के निर्बाध और गुणवत्तापूर्ण बिजली मिल रही है। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के प्रबंध संचालक श्री क्षितिज सिंघल ने बताया कि कंपनी द्वारा इनहाउस बनाये गये इन ऑटो कटऑफ ट्रांसफार्मर्स की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इनमें उन्नत तकनीक का उपयोग किया गया है। इससे संबंधित क्षेत्र में स्वीकृत क्षमता से अधिक विद्युत भार का उपयोग होने पर ट्रांसफार्मर स्वमेव ट्रिप हो जाता है। इससे संबंधित क्षेत्र में अनधिकृत विद्युत का उपयोग रूका है। साथ ही क्षमता से अधिक लोड होने के कारण ट्रांसफार्मर के जलने या खराब होने की समस्या से भी निजात मिली है। साथ ही कटऑफ होने से उपकरणों के जलने या फिर डेमैज होने की गुंजाइश नहीं रहती है।

कंपनी द्वारा सीहोर जिले में स्वनिर्मित नवीन तकनीकी पर आधारित 150 से भी अधिक ऑटो कटऑफ वितरण ट्रांसफार्मर्स प्रतिस्थापित किये गए हैं, जिनकी कार्यक्षमता बेहतर और गुणवत्तापूर्ण है। इन ट्रांसफार्मरों के परिणामों को देखते हुए कंपनी द्वारा आगामी वर्ष में स्माल ट्रांसफार्मर रिपेयरिंग यूनिट (एसटीआरयू) भोपाल के अंतर्गत 2 हजार 240 ऑटो कट ऑफ वितरण ट्रांसफार्मर निर्माण करने के लिए फण्ड उपलब्ध कराया गया है।

कलेक्टर सिंह करेंगे लार्वा फ्री कालोनियों को पुरस्कृत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल शहर के नागरिकों को मच्छर जनित बीमारियों एवं इसकी रोकथाम के प्रति जागरूक करने के लिए मेरी कालोनी - लार्वा फ्री कैंपेन प्रारंभ किया जा रहा है, जिसमे रहवासी स्वयं अपने घरों को लार्वा मुक्त कर अभियान के तहत दावा प्रस्तुत करेंगे।

इस अभिनव प्रयास के तहत कलेक्टर श्री कौशलेंद्र विक्रम सिंह द्वारा घोषणा की गई है कि लार्वा फ्री कॉलोनियों को स्वस्थ और स्वच्छ शहर बनाने में सहयोग हेतु प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार दिया जाएगा। वाहक जनित बीमारियों के बारे में लोगों को सजग करने और रोकथाम के उपायों के बारे में समझाने के उद्देश्य से ये पहल की गई है। राष्ट्रीय वेक्टर बोर्न डिजीज कंट्रोल प्रोग्राम के तहत मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया, जापानी इंसेफेलाइटिस इत्यादि बीमारियों की रोकथाम और उन्मूलन के लिए कार्य किया जाता है। सरकार, प्रशासन और आमजन के निरंतर प्रयासों से मलेरिया के प्रकरणों में काफी कमी आई है।

भोपाल जिले में भी मलेरिया के केस में निरंतर कमी आ रही है। डेंगू और चिकनगुनिया के प्रकरणों में अपेक्षित कमी लाने हेतु मेरी कॉलोनी - लार्वा फ्री कैंपेन की शुरुआत की जा रही है। डेंगू और चिकनगुनिया लार्वा से होने पैदा होने वाली बीमारियां है। ये लार्वा पानी में पैदा होता है। पानी को एक सप्ताह के भीतर साफ न करने या न बदलने पर लार्वा पैदा होने की संभावना बढ़ जाती है। इसके लिए घरों में पानी इकठ्ठा होने के सभी कंटेनर की जांच नियमित रूप से की जाना जरूरी है ताकि लार्वा पैदा होने की स्थिति ही न बने। लार्वा पैदा होने के कंटेनर और स्थानों की सही समय पर पहचान, लार्वा पनपने से रोकने के प्रयासों को बढ़ावा देने और लार्वा विनष्टीकरण के लिए यह विशेष पहल की जा रही है।

इसके तहत सर्वप्रथम मकान मालिक अपने घर में लार्वा होने की जांच करेंगे। पानी की टंकी, कूलर, गमले ,पुराने टायर, अनुपयोगी बर्तन फ्रीज की ट्रे, एयर कंडीशनर के पानी को इकठ्ठा करने के बर्तन, पशु पक्षियों के पानी, पीने के बर्तन या टंकी जैसे स्थानों की नियमित रूप से जांच की जाएगी। घर में लार्वा न होने की सूचना कॉलोनी अध्यक्ष अथवा रहवासी समिति को दी जाएगी। कॉलोनी के प्रत्येक घर में इसी प्रकार से सर्वे कर लार्वा न होने की सूचना जिला मलेरिया कार्यालय को दी जाएगी। मलेरिया विभाग द्वारा ऐसी कॉलोनियों के घरों का सर्वे कर लार्वा न होने की जांच की जाएगी। लार्वा न होने पर कॉलोनी को प्रशासन द्वारा प्रोत्साहन स्वरूप राशि प्रदान की जाएगी। स्वास्थ्य और स्वच्छता एक दूसरे के पर्याय हैं। इस दिशा में भोपाल को क्लीन और हेल्दी सिटी बनाने के लिए जनप्रतिनिधियों द्वारा विशेष रूप से कार्य किया जा रहा है । महापौर श्रीमती मालती राय, नगर निगम अध्यक्ष श्री किशन सूर्यवंशी के निर्देशन में प्रत्येक स्तर पर प्रयास किया जा रहा है।

नगर निगम आयुक्त श्री हरेंद्र नारायण और नगर निगम अमला इस दिशा में निरंतर प्रयासरत है। स्वास्थ्य विभाग भोपाल द्वारा बीमारियों की रोकथाम के लिए नगर निगम, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग, मोहल्ला सुधार समितियों, गैर सरकारी संगठनों का सहयोग लेकर लार्वा फ्री कॉलोनी कैंपेन की शुरुआत की जा रही है।

जीआईएस समिट की तैयारियों को लेकर कलेक्टर ने की बैठक

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। कलेक्टर श्री कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने आज जिला पंचायत सभागार में 24-25 फरवरी को भोपाल में आयोजित हो रही ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट (जीआईएस) की तैयारियों को लेकर बैठक की। बैठक में अधिकारियों को दिये गये दायित्वों का निर्धारण एवं आपसी समन्वय से कार्य करने पर विशेष जोर दिया गया।

इस अवसर पर एडीएम श्री सिद्धार्थ जैन, सीईओ जिला पंचायत श्रीमती इला तिवारी, सीईओ स्मार्ट सिटी श्रीमती अंजू अरुण कुमार सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित थे।

बैठक में कलेक्टर श्री सिंह ने जीआईएस में आने वाले अतिथियों के स्वागत,आवागमन एवं समस्त व्यवस्थाओं के लिए अधिकारियों की जिम्मेदारियां तय कीं। उन्होंने भोपाल शहर के सौंदर्यीकरण, साफ-सफाई, प्रमुख मार्गों की मरम्मत, आयोजन स्थल, पार्किंग व्यवस्था एवं पेयजल तथा चलित शौचालयों की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश नगर निगम को दिए। यातायात प्रबंधन को सुचारू रखने के लिए नगर निगम, लोक निर्माण विभाग को सभी मार्गों पर उचित

यातायात एवं पार्किंग व्यवस्था सुनिश्चित करने को कहा गया, साथ ही सभी पार्किंग स्थलों पर वाहनों की टैगिंग की व्यवस्था करने के निर्देश भी दिए गए। एयरपोर्ट व्यवस्था को लेकर कलेक्टर ने राजा भोज एयरपोर्ट एवं वीवीआईपी लाउंज स्टेट हैंगर भोपाल पर सुरक्षा मानकों का पालन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने प्रकाश व्यवस्था एवं सफाई व्यवस्था को भी सुदृढ़ बनाए रखने पर जोर दिया।

जीआईएस आयोजन के सुचारू संचालन के लिए मुख्य कंट्रोल रूम एवं पार्किंग कंट्रोल रूम स्थापित करने के निर्देश भी दिए गए। कलेक्टर श्री सिंह ने सभी अधिकारियों को आपसी समन्वय के साथ कार्य करने के निर्देश दिये साथ ही उन्होंने कहा कि समिट के सफल आयोजन के लिए सभी विभागों को एकजुट होकर कार्य करना होगा ताकि यह आयोजन एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत कर सके।

महिला से लूटपाट के दो आरोपी गिरफ्तार, 24 घंटे के अंदर लूटे गए जेवर और मोबाइल जब्त

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)। माड़ा थाना पुलिस ने शनिवार को महिला के बैग छीनकर फरार दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। घटना बीते शुक्रवार की है। आरोपी के पास से सोने-चांदी और मोबाइल फोन जब्त किए गए हैं।

इधर, माड़ा थाना प्रभारी शिवपूजन मिश्रा ने कहा- कल यानी शुक्रवार दोपहर को एक महिला ऑटो में सवार होकर माड़ा की ओर आ रही थी। इसी दौरान राज-मिलान के पास छोटेलाल बसोर और हरिप्रसाद बसोर ने महिला का बैग छीनने का प्रयास किया। जब महिला ने विरोध किया, तो आरोपियों ने उसके साथ मारपीट की और बैग छीनकर फरार हो गए।

पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने तत्काल मामला दर्ज कर जांच शुरू की। दोनों आरोपियों की पहचान कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। आरोपियों से एक सोने की बाली, एक सोने की फुलिया, एक जोड़ी चांदी की पायल और रियलमी कंपनी का एंड्रॉइड मोबाइल बरामद किया गया।

महिला ठग गिरफ्तार, एक हफ्ते में पैसा 5 गुना करने के नाम पर 1.45 लाख की ठगी, वॉट्सग्रुप की मदद से पकड़ा

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)। सिंगरौली पुलिस ने एक महिला ठग को गिरफ्तार किया है। वह लोगों को एक सप्ताह में पैसा पांच गुना करने का झांसा देकर ठगती थी। आरोपी स्यादा खातून ने बरगवां क्षेत्र में मुस्लिम समुदाय के लोगों को अपना शिकार बनाया और कुल 1.45 लाख रुपए ऐंठ लिए।

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शिवकुमार वर्मा के अनुसार, साइबर अपराध रोकने के लिए बरगवां थाना पुलिस ने एक वॉट्सएप ग्रुप बनाया है। इसमें ही इसकी सूचना मिली। आरोपी महिला ने बरगवां के छोटे मोहम्मद, इसराइल मोहम्मद, सलीता खातून, हसनैन मोहम्मद, मुक्तार मोहम्मद और अरबाज खान को अपना शिकार बनाया। पीड़ितों से एक सप्ताह में पैसा पांच गुना करने का वादा कर रकम ले ली गई। जब एक सप्ताह बीतने के बाद भी पैसे नहीं लौटाए गए तो पीड़ितों ने पुलिस के वॉट्सएप ग्रुप पर शिकायत की। पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर लिया और कुछ रकम भी बरामद की है। शेष राशि की बरामदगी के प्रयास जारी हैं।

9 को 3 घंटे बिजली कटौती

सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक जमोड़ी समेत कई इलाकों में गुल रहेगी लाइट

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी जिले में 9 फरवरी को तीन घंटे की बिजली कटौती की घोषणा की गई है। मध्य प्रदेश पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के अध्यक्ष अभियंता ने बताया कि 33/11 केवी उपकेंद्र जमोड़ी में वीसीवी (वैक्यूम सर्किट ब्रेकर) के रखरखाव कार्य के चलते यह कटौती की जा रही है।

जमोड़ी फीडर से जुड़े कॉलेज क्षेत्र प्रभावित: विद्युत आपूर्ति सुबह 9 बजे से दोपहर 12 बजे तक बाधित रहेगी। कार्य की प्रगति के अनुसार इस अवधि में बदलाव हो सकता है। इस दौरान, जमोड़ी फीडर से जुड़े कॉलेज क्षेत्र, गोपालदास, हाउसिंग बोर्ड और नौगमा फीडर के क्षेत्रों में बिजली उपलब्ध नहीं रहेगी।

विद्युत विभाग ने क्षेत्रवासियों से अग्रिम तैयारी करने की अपील की है। विशेष रूप से छात्र-छात्राएं, व्यापारी, कार्यालय और घरेलू उपभोक्ता वैकल्पिक व्यवस्था कर लें। विभाग का कहना है कि यह कार्य बेहतर और निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है।

मेंटेनेंस के दौरान तकनीकी टीम उपकरणों का निरीक्षण भी करेगी, जिससे भविष्य में बेहतर सेवाएं प्रदान की जा सकें। आपातकालीन स्थिति में उपभोक्ता विद्युत वितरण कंपनी के हेल्पलाइन नंबर या नजदीकी कार्यालय से संपर्क कर सकते हैं।

चाकघाट कस्बे में चोर सक्रिय, पुलिस निष्क्रिय

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। चाकघाट थाना छेत्र में चोर लगातार चोरी की घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं। वहीं इन चोरी और लूट से नगरवासी परेशान हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि 5 दिन पहले हुई बाइक चोरी का खुलासा भी नहीं हो पाया था कि मंगलवार की रात चोरों ने एक और दो पहिया पर हाथ साफ कर दिया. इन घटनाओं ने ठंड में पुलिस के पसीने छुड़ा दिए हैं। तीन दिन पहले कस्बे में हुई बाइक चोरी के मामले में चाकघाट थाना पुलिस अभी तक किसी निष्कर्ष पर पहुंची भी नहीं थी, कि मंगलवार रात बेखौफ चोरों ने एक बार फिर एक और दो पहिया वाहन पर हाथ साफ कर दिया। चाकघाट पुलिस की निष्क्रियता के चलते नगर में अपराधी नित्य नई घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं।

थाने से महज 01 किलोमीटरमीटर दूर मोहल्ला बघेडी निवासी तत्कालीन नगर पार्षद सत्यम केसरवानी के दुकांन के सामने से रात में चोर उनकी हाल ही की खरीदी नई दो पहिया वाहन को उठा ले गए. उधर उसी मोहल्ला में संचालित एक एजेंसी के सामने से एक नेशनल मीडिया के पत्रकार की मोटरसाइकिल को देर रात बेखौफ चोर उठा ले गए। वाहन चोर गिरोह आए दिन दो पहिया वाहन चोरी की घटनाओं को अंजाम देकर पुलिस प्रशासन को खुली चुनौती दे रहा है। पुलिस ने बाइक्स के संबंध में आसपास पूछताछ की मगर बाइक का कोई सुराग नहीं लगा, दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरे में बाइक चोरी की यह घटना कैद हो गई जिसमें आप देख सकते हैं कि बड़ी आसानी से दो युवक बाइक का ताला खोलकर आसानी से बाइक चोरी की घटना को अंजाम देकर मौके से फरार हो जाते हैं।

अनूपपुर के पुष्पराजगढ़ में दिव्यांगजनों के लिए शिविर

82 लोगों को बांटे व्हीलचेयर, ट्राइसिकल समेत कई सहायक उपकरण

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)। अनूपपुर के पुष्पराजगढ़ में दिव्यांगजनों के लिए कार्यक्रम हुआ। सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग की एडिप योजना, राष्ट्रीय वयोश्री योजना और एसईसीएल की सीएसआर योजना के तहत स्व सहायता समूह भवन में विशेष शिविर लगाया गया।

इस अवसर पर पुष्पराजगढ़ क्षेत्र के विधायक फुन्देलाल सिंह मार्को और जनपद पंचायत के पूर्व अध्यक्ष हीरा सिंह श्याम ने दिव्यांगजनों को विभिन्न सहायक उपकरण वितरित किए। कार्यक्रम में कुल 82 दिव्यांगजनों को लाभान्वित किया गया, जिसमें 2 लोगों को मोटराइज्ड ट्राइसिकल, 24 को सामान्य ट्राइसिकल, 16 को व्हीलचेयर और 16 लोगों को श्रवण यंत्र दिए गए।

वितरित किए गए अन्य सहायक उपकरणों में बैसाखी, छड़ी, रोलेटर, सुगम्य केन, कैलिपर, कृत्रिम पैर और कृत्रिम हाथ शामिल थे।

अज्ञात वाहन ने बाइक सवार परिवार को कुचला

हादसे में मां-बच्चों की हुई मौत, शहडोल-रीवा मुख्य मार्ग पर हुआ हादसा

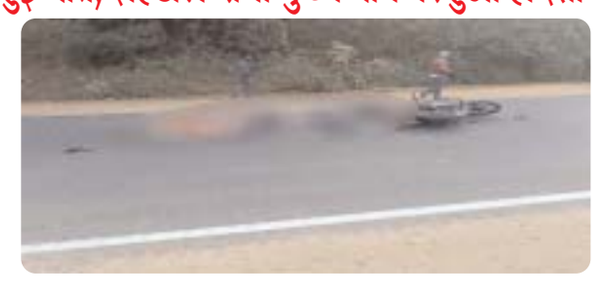

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। शहडोल जिले के देवलौंद थाना क्षेत्र में शहडोल-रीवा मुख्य मार्ग पर सेझहरी मोड के पास एक अज्ञात भारी वाहन ने बाइक सवार परिवार को कुचल दिया। हादसे में मां और बच्चों की मौत हो गई। घटना शुक्रवार शाम 5 बजे की है।

इस हादसे में बाइक पर सवार नरेंद्र सिंह उर्फ गोलू (8) और काजल सिंह (12) की मौके पर ही मौत हो गई। उनकी मां सावित्री सिंह (45) ने इलाज के दौरान शुक्रवार देर रात अंतिम सांस ली। परिवार के मुखिया लालजी सिंह गंभीर रूप से घायल हैं और उनका इलाज जारी है।

बच्चों के शरीर के अंग सड़क पर चिपक गए: स्थानीय लोगों ने बताया कि इतनी भयावह टक्कर थी कि बच्चों के शरीर के कुछ अंग सड़क पर चिपक गए। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को पहले सिविल अस्पताल ब्यौहारी ले जाया गया, फिर बेहतर इलाज के लिए रीवा रेफर किया गया।

मैहर जिले का रहने वाला है परिवार: थाना प्रभारी डीके दहिया ने बताया कि मृतक परिवार मैहर जिले के रामपुर थाना क्षेत्र के सिंदूरा गांव का रहने वाला था और शहडोल में रिश्तेदारी से वापस लौट रहा था। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और फरार वाहन चालक की तलाश में जुटी है। आज शनिवार को तीनों मृतकों का पोस्टमॉर्टम किया गया।

समर्थन मूल्य पर गेंहू खरीदी के लिए पंजीयन जारी

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य देने के लिए शासन द्वारा समर्थन मूल्य पर खरीद की जाती है। शासन द्वारा वर्तमान वर्ष के लिए गेंहू का समर्थन मूल्य 2425 रूपये प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया है। समर्थन मूल्य पर गेंहू खरीदी के लिए किसानों का पंजीयन 20 जनवरी से शुरू हो गया है। पंजीयन 31 मार्च तक होगा। किसान एमपी किसान एप, ई-उपार्जन पोर्टल तथा ई-उपार्जन मोबाइल एप पर अपना पंजीयन करा सकते हैं। इस संबंध में जिला आपूर्ति अधिकारी ने बताया कि किसान प्रस्तावित खरीदी केन्द्रों में गेंहू उपार्जन के लिए पंजीयन करा सकते हैं। सभी किसान निर्धारित खरीदी केन्द्रों में अपना आनलाइन पंजीयन अवश्य करायें।

सिकल सेल खत्म करने के कार्यक्रम को प्राथमिकता दें, जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक में शहडोल कलेक्टर ने कहा

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। कलेक्टर कार्यालय के विराट सभागार में जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक में कलेक्टर डॉ. केदार सिंह ने स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करने के लिए कई निर्देश दिए। उन्होंने 70 वर्ष से अधिक आयु के सभी पात्र व्यक्तियों के आयुष्मान कार्ड बनाने पर विशेष जोर दिया, जिससे लोगों को 5 लाख रुपए तक की निःशुल्क मेडिकल सुविधा मिल सके।

बैठक में सिकल सेल उन्मूलन कार्यक्रम को प्राथमिकता देने का निर्णय लिया गया। कलेक्टर ने एनआरसी में भर्ती बच्चों की देखभाल और डिस्चार्ज के बाद भी उनका फॉलोअप करने को कहा। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. राजेश मिश्रा ने स्वास्थ्य कार्यक्रमों की प्रगति रिपोर्ट पेश की।

बैठक में एएनसी पंजीयन, टीकाकरण, प्रसव सेवाएं, परिवार कल्याण, अंधत्व निवारण, क्षय नियंत्रण, कुष्ठ नियंत्रण और राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम की समीक्षा की गई।

बैठक में जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास मनोज लारोकर, जिला आयुष अधिकारी डॉ. शशि प्रभा पांडेय, डीएचओ डॉ. आरके शुक्ला, डॉ एसडी कंवर सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

पति ने फांसी लगाई, पत्नी ने प्रेमिका को जहर दिया

मां का आरोप- महिला 7-8 लोगों को लेकर आई, बेटी को पीटा, हमारे सामने उसने दम तोड़ा

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर में शनिवार को एक व्यक्ति ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। कुछ देर बाद 16 वर्षीय एक किशोरी ने भी जहर खाकर सुसाइड कर लिया। यह घटनाक्रम ओरछा रोड थाना क्षेत्र के एक गांव का है।

किशोरी के परिजनों ने कहा कि आत्महत्या करने वाले व्यक्ति की पत्नी और उसके परिजनों ने प्रेम प्रसंग का संदेह करते हुए नाबालिग को जबरन जहर खिला दिया। किशोरी की मां और भाई का कहना है कि आरोपियों ने पहले उनकी बेटी के साथ मारपीट की और फिर जबरदस्ती जहर खिलाकर मार डाला। परिवार ने कार्रवाई की मांग की। ओरछा रोड पुलिस दोनों मौत के बीच संबंध और आरोपों की जांच कर रही है।

दिल्ली में 27 साल बाद भाजपा की वापसी, कार्यकर्ताओं ने की आतिशबाजी, एक दूसरे को खिलाई मिठाई

मीडिया ऑडीटर, पन्ना (निप्र)। दिल्ली विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को 27 साल बाद पूर्ण बहुमत मिलने से पार्टी कार्यकर्ताओं में जश्न का माहौल है। पन्ना में भी इस जीत का उत्सव मनाया जा रहा है। गुनौर विधानसभा के बीजेपी विधायक राजेश वर्मा ने अपने समर्थकों के साथ आतिशबाजी की और मिठाई बांटकर जीत का जश्न मनाया।

दिल्ली की 70 सीटों में से 48 पर बढ़त: रुझानों के अनुसार, बीजेपी को दिल्ली की 70 विधानसभा सीटों में से 48 सीटों पर बढ़त मिली है, जो पूर्ण बहुमत के लिए पर्याप्त है। यह जीत विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि बीजेपी 27 वर्षों के लंबे अंतराल के बाद दिल्ली में सरकार बनाने जा रही है।

जगह-जगह मनाया गया जीत का उत्सव: विधायक राजेश वर्मा ने इस जीत का श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व को दिया। उन्होंने कहा कि दिल्ली की जनता ने झूठ और भ्रष्टाचार की राजनीति को नकार दिया है। पन्ना से लेकर दिल्ली तक बीजेपी कार्यकर्ताओं में उत्साह का माहौल है, और जगह-जगह जीत का जश्न मनाया जा रहा है। कार्यकर्ता एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर बधाई दे रहे हैं और आतिशबाजी कर खुशी का इजहार कर रहे हैं।

लापता युवती बरामद, पुलिस ने सतना से ढूंढकर परिवार से मिलाया

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)। अनूपपुर के कोतवाली पुलिस थाना अंतर्गत लापता युवती को पुलिस ने सतना जिले के रामपुर बघेलान से बरामद कर उसके परिजनों से मिलाया है। घटना 30 जनवरी की है। पिता पंचू दहायत (52) ने थाने में बेटी के लापता होने की शिकायत दर्ज कराई थी। जिसके बाद पुलिस ने गुमशुदगी का मामला दर्ज किया था। कोतवाली से प्रधान आरक्षक शिवशंकर प्रजापति और महिला आरक्षक अंकिता सोनी की टीम ने ने लापता युवती को सतना जिले से बरामद किया। जिसके बाद परिजनों को सुपुर्द कर दिया है।

देहात लोकरंग पर्व 2025 का कल से होगा शुभारम्भ

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। हर वर्ष की तरह इस बार भी देहात लोक रंग पर्व की तैयारी जोरो पर चल रही है इस बार इस आयोजन क 9 वां संस्करण होगा संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से रावेन्द्र प्रताप सिंह शिक्षा सांस्कृतिक समिति द्वारा देहात लोक रंग पर्व का आयोजन दिनांक 9 से 11 फरवरी तक सखी मंडपम सभागार, बी.टी. एल. फैक्ट्री के पास रीवा में प्रतिदिन शाम 7 बजे से होगा। कलाकार अपनी नाट्य प्रस्तुतियों एवं लोक कलाओं की प्रस्तुतियां करेंगे, कार्यक्रम में पहले दिन पूर्वरंग की प्रस्तुति में क्षितिज पांडेय की कविता पाठ एवं ऐ. के. एस. यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों के द्वारा अहिरहाई लोक नृत्य की प्रस्तुति होगी, उसके बाद नाटक संत तुलसीदास लेखक संजय मेहता, सतीश दवे निर्देशक संजय मेहता एवं प्रस्तुति रंगशीर्ष भोपाल की होगी।

दूसरे दिन पूर्व रंग मे शहर में स्थित नुक्कड़ पाठशाला के विद्यार्थियों द्वारा ऐ आई और नैतिकता के ऊपर प्रसून मिश्रा और साथियो के संयोजन मे प्रस्तुति होगी तथा श्रुति कीर्ति द्विवेदी द्वारा राजस्थानी लोकनृत्य की प्रस्तुति भी की जाएगी। और नाटक स्वांग मल्टीनेशनल लेखक अलखनन्दन एवं निर्देशक सादात भारती और प्रस्तुति संप्रेषणा नाट्य मंच कटनी की होगी। तीसरे दिन पूर्व रंग की प्रस्तुति मे लोक रंग समिति सतना के कलाकारों के द्वारा रंगसंगीत की प्रस्तुति की जाएगी तथा इन्ही के द्वारा नाटक जानपड़े लेखक निर्देशक सविता दाहिया द्वारा की जाएगी। इस पूरे आयोजन की जानकारी संस्था के सचिव विपुल सिंह के द्वारा दी गई एवं संस्था की अध्यक्ष उर्मिला सिंह ने सभी सुधि दर्शकों से इस आयोजन में शामिल होने का अनुरोध किया है। इस आयोजन मे प्रवेश निः शुल्क होगा।

वर्ष की पहली नेशनल लोक अदालत का आयोजन 8 को

न्यायालय में लंबित राजीनामा योग्य प्रकरणों एवं प्री-लिटिगेशन प्रकरणों का निराकरण किया जावेगा

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली एवं राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के निर्देशानुसार तथा प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण श्री प्रयाग लाल दिनकर के मार्गदर्शन में वर्ष 2025 में आयोजित होने वाली नेशनल लोक अदालत के क्रम में पहली 08 मार्च 2025, दूसरी 10 मई 2025, तीसरी 13 सितंबर 2025 एवं चौथी 13 दिसंबर 2025 को नेशनल लोक अदालतों का आयोजन किया जायेगा।

वर्ष 2025 की प्रथम नेशनल लोक अदालत का आयोजन दिनांक 08 मार्च 2025 को जिला न्यायालय सीधी तथा सिविल न्यायालय चुरहट, रामपुर नैकिन एवं मझौली में किया जायेगा। जिला न्यायाधीश एवं सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सीधी श्री वीरेन्द्र जोशी ने बताया कि नेशनल लोक अदालत में न्यायालय में लंबित राजीनामा योग्य प्रकरणों एवं प्री-लिटिगेशन प्रकरणों का निराकरण किया जावेगा। श्री जोशी ने बताया कि लोक अदालत के माध्यम से राजीनामा योग्य आपराधिक प्रकरणों, सिविल प्रकरणों, चेक बाउंस प्रकरणों, वैवाहिक एवं पारिवारिक प्रकरणों, विद्युत अधिनियम के प्रकरणों, धन वसूली प्रकरणों आदि का निराकरण पक्षकारों की आपसी सहमति से किया जावेगा। नेशनल लोक अदालत के संबंध में अधिक जानकारी के लिए संबंधित न्यायालय अथवा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के कार्यालय से संपर्क किया जा सकता है।

तिलवारी सरपंच के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव

उपसरपंच समेत 17 सदस्यों ने भ्रष्टाचार, मनमानी और धमकाने का आरोप लगाया

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी जिले के तिलवारी ग्राम पंचायत के सरपंच राजेंद्र प्रसाद वर्मा के खिलाफ उपसरपंच सहित 17 सदस्यों ने अविश्वास प्रस्ताव एसडीएम आर.पी. त्रिपाठी को सौंपा है।

सदस्यों का आरोप है कि सरपंच ढाई साल से बिना ग्राम सभा की बैठक बुलाए मनमाने ढंग से काम कर रहे हैं। पंचायत के कार्यों में सदस्यों की राय नहीं ली जाती और विरोध करने पर उन्हें धमकाया जाता है। उपसरपंच फूल भान यादव के अनुसार, मस्टर रोल में हेरफेर कर लाखों-करोड़ों रुपए का गबन किया गया है। जब सदस्य इस संबंध में जानकारी मांगते हैं तो सरपंच उनके साथ अभद्र व्यवहार करते हैं।

एसडीएम त्रिपाठी ने मामले को गंभीरता से लेते हुए सभी सदस्यों से अलग-अलग पूछताछ की। उन्होंने आश्वासन दिया कि अविश्वास प्रस्ताव को कानूनी प्रक्रिया के तहत आगे बढ़ाया जाएगा और एक नई तिथि तय कर इस पर निर्णय लिया जाएगा। मीडिया की मौजूदगी में पंचायत सदस्यों ने कहा कि वे सरपंच की कार्यप्रणाली से असंतुष्ट हैं और प्रशासन से जल्द कार्रवाई की मांग कर रहे हैं।

बता दें कि तिलवारी ग्राम पंचायत मझौली जनपद पंचायत में आती है।

लोक सेवा आयोग की परीक्षा 16 को

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। अपर कलेक्टर ने जानकारी देकर बताया है कि परीक्षा नियंत्रक मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग रेसीडेंसी एरिया इंदौर द्वारा प्राप्त निर्देश के पालन में रविवार 16 फरवरी को जिला मुख्यालय में स्थित विभिन्न परीक्षा केन्द्रों में प्रातः 10 बजे से 12 बजे तक एवं दोपहर 2.15 से 4.15 बजे तक दो सत्रों में परीक्षा सम्पन्न होना है।

विचार

कुष्ठ रोग निवृत्ति के साधक, बाबा आमटे

आनंदवन, चंद्रपुर, महाराष्ट्र में मुरलीधर देवीदास बाबा आमटे का जन्म एक संपन्न देशस्थ ब्राह्मण परिवार में 26 दिसंबर 1914 को हुआ था। महाराष्ट्र के हिंगणघाट शहर में उनके पिता देवीदास आमटे एक औपनिवेशिक सरकारी अधिकारी थे। मुरलीधर आमटे ने बचपन में ही बाबा उपनाम प्राप्त कर लिया था। बाबा आमटे आठ बच्चों में सबसे बड़े थे। एक धनी ज़मींदार के सबसे बड़े बेटे के रूप में उनका बचपन एक सुखद बचपन था। लेकिन वे हमेशा भारतीय समाज में व्याप्त वर्ग असमानता से अवगत थे।

बकायदा, कानून में प्रशिक्षित उन्होंने वर्धा में एक सफल कानूनी अभ्यास विकसित किया। वह जल्द ही भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हो गए। 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में शामिल होने के लिए औपनिवेशिक सरकार द्वारा कैद किए गए भारतीय नेताओं के लिए एक बचाव वकील के रूप में काम करना शुरू कर दिया। उन्होंने महात्मा गांधी द्वारा शुरू किए गए आश्रम सेवाग्राम में कुछ समय बिताया और गांधीवाद के अनुयायी बन गए। उन्होंने चरखा का उपयोग करके सूत काता। जब गांधी को पता चला कि डॉ. आमटे ने कुछ ब्रिटिश सैनिकों के भद्दे तानों से एक लड़की का बचाव किया था, तो गांधी ने उन्हें नाम दिया- अभय साधक सत्य का निडर खोजी। एक दिन बाबा आमटे की मुलाकात एक जीवित लाश और कुष्ठ रोगी तुलसीराम से हुई। तुलसीराम की दुर्दशा देखकर डर से काँप उठे। बाबा आमटे एक सोच और समझ बनाना चाहते थे कि कुष्ठ रोगियों की सही मायने में मदद तभी की जा सकती है जब समाज मानसिक कुष्ठ से मुक्त हो। इस सोच को दूर करने के लिए उन्होंने एक बार खुद को एक मरीज के बेसिली का इंजेक्शन लगा लिया। ताकि यह साबित हो सके कि यह बीमारी अत्यधिक संक्रामक नहीं थी। उन दिनों, कुष्ठ रोग से पीड़ित लोगों को सामाजिक कलंक का सामना करना पड़ता था। यहां तक कि उन्होंने एक प्रयोग के तहत एक कोढ़ी के जीवाणुओं को अपने शरीर में इंजेक्ट होने दिया ताकि यह साबित किया जा सके कि कुष्ठ रोग अत्यधिक संक्रामक नहीं है। पुनर्वासित और ठीक हुए रोगियों के लिए उन्होंने व्यावसायिक प्रशिक्षण और हस्तशिल्प के विनिर्माण की व्यवस्था की। स्तुत्य, बाबा आमटे ने संघर्ष किया और कुष्ठ रोग के उपचार को लेकर कलंक और अज्ञानता को दूर करने की कोशिश की। निवृत्ति के साधक, बाबा आमटे ने महाराष्ट्र में कुष्ठ रोगियों, विकलांगों और हाशिए पर रहने वाले लोगों के इलाज और पुनर्वास के लिए तीन आश्रमों की स्थापना की।

दिल्ली में भाजपा की जीत और आप की हार के सियासी मायने को ऐसे समझिए

कमलेश पांडे

दिल्ली विधानसभा चुनाव 2025 में विगत 12 वर्षों से साारूढ़ आम आदमी पार्टी यानी आप की हार और प्रमुख विपक्षी पार्टी भाजपा की अप्रत्याशित जीत के सियासी मायने दिलचस्प हैं। इसके राजनीतिक असर भी दूरगामी होंगे। योंकि एक तरफ जहां भाजपा की जीत से केंद्र में साारूढ़ %एनडीए% की एकजुटता मजबूत होगी, वहीं देश की प्रमुख विपक्षी पार्टी कांग्रेस के नेतृत्व वाले इंडिया गठबंधन में बिखराव को बढ़ावा मिलेगा। ऐसा इसलिए कि इंडिया गठबंधन की अगुवा पार्टी कांग्रेस ने दिल्ली में अपने पूर्व गठबंधन सहयोगी आप, जो दिल्ली में लंबे समय से साारूढ़ थी, को हराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इससे कांग्रेस ने आप से जहां अपना पुराना सियासी हिसाब-किताब बराबर कर लिया है, वहीं अपनी खोई राजनीतिक जमीन हासिल करने का शिलान्यास भी कर चुकी है। वहीं, अब उसमें इस बात की भी नई उमीद जगी है कि 2030 के दिल्ली विधानसभा चुनाव में जब भाजपा से उसका सीधा मुकाबला होगा तो उसकी स्थिति और मजबूत होगी और उसका खोया जनाधार पुनः वापस लौट जाएगा।

बता दें कि 2010 के दशक के शुरुआती सालों में पूर्व नौकरशाह अरविंद केजरीवाल समेत आप% के कतिपय प्रमुख नेताओं के द्वारा लोकप्रिय समाजसेवी अन्ना हजारे को आगे करके %इंडिया अगेंस्ट करप्शन% नामक एनजीओ के तत्वावधान में कांग्रेस की तत्कालीन डबल इंजन सरकार यानी मनमोहन सिंह सरकार और शीला दीक्षित सरकार के खिलाफ जो भ्रष्टाचार विरोधी मुहिम चलाई गई, उससे 2013 में दिल्ली में 15 वर्षों से सत्तारूढ़ शीला दीक्षित सरकार और 2014 में केंद्र में 10 वर्षों से सत्तारूढ़ मनमोहन सिंह सरकार का सफाया हो गया था।

राजनीतिक मामलों के जानकार बताते हैं कि चूंकि इस भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भाजपा का भी गुप्त समर्थन हासिल था, इसलिए यह आंदोलन काफी सफल रहा। हालांकि एनजीओ के बैनर तले शुरू हुए इस आंदोलन की देशव्यापी लोकप्रियता से उत्साहित समाजसेवियों ने जब आम आदमी पार्टी यानी %आप% का गठन करके दिल्ली विधानसभा चुनाव में अपनी भागीदारी जताई तो आरएसएस और भाजपा ने इससे दूरी बना ली। लेकिन तब तक अन्ना हजारे की आड़ में अरविंद केजरीवाल ने अपनी सामाजिक आभा इतनी चमका ली थी कि उनकी नवगठित पार्टी %आप% ने कांग्रेस की पूरी और बीजेपी की कुछ कुछ राजनीतिक जमीन हड़प ली।

यदि गौर किया जाए तो 2013 में जब आप ने धर्मनिरपेक्षता की आड़ में उसी कांग्रेस के सहयोग से भाजपा विरोधी गठबंधन सरकार का गठन किया, जिसका विरोध करके वह चुनाव जीती थी और त्रिशंकु विधानसभा की नौबत आई थी। कांग्रेस की इस एक मात्र भूल ने 2015 के मध्यावधि चुनाव में जहां उसका सफाया कर दिया, वहीं आप की ओर मुस्लिम मतदाताओं के बढ़े रुझान से उसे रिकॉर्ड जीत मिली। क्योंकि भ्रष्टाचार मुक्त राजनीति देने के नाम पर दलितों, पिछड़ों और सवर्णों के अलावा पूर्वांचलियों और पहाड़ियों के साथ-साथ दिल्ली के पंजाबियों-बनियों ने भी आप का साथ दिया। इससे भाजपा भी भौंचक्की रह गई, क्योंकि 2014 में ही उसने पीएम मोदी के नेतृत्व में देश फतह किया था। हालांकि, उसके बाद से ही तत्कालीन गृहमंत्री राजनाथ सिंह को संतुलित करने की जो भाजपा के गुजराती-मराठी लॉबी की अंदरूनी राजनीति शुरू हुई, उससे पूर्वांचलियों में भाजपा की साख गिरी और आप को मजबूती मिली।

वहीं, 2020 के दिल्ली विधानसभा चुनाव में भी आप की लोकप्रियता थोड़ी कम हुई, लेकिन भाजपा और कांग्रेस के मुकाबले काफी ज्यादा रही। इसके बाद जब आप ने पंजाब में कांग्रेस को, दिल्ली नगर निगम चुनाव में भाजपा को जबरदस्त शिकस्त दी तो कांग्रेस किंकर्तव्यविमूढ़, लेकिन भाजपा चौकन्नी हो गई। क्योंकि अरविंद केजरीवाल ने यूपी, गोवा, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा समेत अन्य राज्यों में भी अपने पांव पसारने शुरू कर दिए। उन्होंने 2023 में आप को राष्ट्रीय पार्टी का तमगा भी दिलवा दिया। कांग्रेस, भाजपा और जनता पार्टी/जनता दल जैसी राष्ट्रीय पार्टियों के बाद आप एक ऐसी पहली क्षेत्रीय पार्टी बनी जिसने एक के बाद दूसरे राज्य यानी दिल्ली के बाद पंजाब में भी अपनी पूर्ण बहुमत वाली सरकार बना ली।

इससे दूरदर्शी भाजपा नेतृत्व सजग हो गया और उसने दिल्ली के उपराज्यपाल के माध्यम से आप सरकार को घेरने की रणनीति बनाई, क्योंकि अरविंद केजरीवाल हर बात में उपराज्यपाल और प्रधानमंत्री को ही निशाना बनाते रहते थे। इस बीच लोकसभा चुनाव 2024 के पहले कांग्रेस के नेतृत्व में बने देशव्यापी इंडिया गठबंधन से जब आप की आंखमिचौली शुरू हुई, तो दिल्ली में कांग्रेस-आप में 4ञ3 का समझौता हो गया, जबकि पंजाब में दोनों में दोस्ताना मुकाबला हुआ। इसमें कांग्रेस ने आप को धो दिया और पंजाब में आप से दोगुनी सीट जीत ली। तभी यह तय हो गया कि आप को यदि अपनी राजनीतिक जमीन बचानी है तो कांग्रेस से दूर जाना होगा। दिल्ली विधानसभा चुनाव में यह हुआ तो जरूर, लेकिन यहां भी आप का दांव उलटा पड़ गया।

दरअसल, आप एक ऐसी पार्टी के रूप में उभर रही थी, जो भाजपा और कांग्रेस से इतर सभी व्यवहारिक मुद्दों में स्पष्ट नजरिया रख रही थी। लेकिन जब से वह भाजपा के निशाने पर आई, उसकी भी रीति-नीति बदल गई। उससे टक्कर लेने के लिए वह जिन थैलीशाहों की शरण में गई, वही आप को ले डूबे। शराब घोटाला इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। जब तक आप बिजली-पानी फ्री देने, स्कूल-अस्पताल को सुधारने आदि पर फोकस किया, तबतक लोकप्रिय बनी रही। लेकिन कोरोना काल की अवैध वसूली और अपनी कतिपय क्षेत्रवादी व अभद्र नीति से जहां वह जनता में अलोकप्रिय हुई, वहीं नीतिगत शराब घोटाले ने उसकी सरकार को ही जेल में डाल दिया। आप सरकार के मुख्यमंत्री की जेल यात्रा और पूर्व उपमुख्यमंत्री की जेल यात्रा तो महज एक बानगी रही, उसके अन्य मंत्री व सांसद भी भ्रष्टाचार के आरोप में जेल गए और बमुश्किल जमानत पर रिहा हुए।

उधर भाजपा ने अरविंद केजरीवाल के शीशमहल, वायु प्रदूषण, यमुना जल प्रदूषण, दिल्ली के कुछ इलाकों के नारकीय हालात आदि पर इतना फोकस किया कि लोगों को यह महसूस हुआ कि दिल्ली में आप की सरकार के रहते दिल्ली का अब और विकास नहीं हो सकता। इससे पहले भी दिल्ली के विकास का सारा श्रेय शीला दीक्षित सरकार को जाता है। वहीं, जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आप को दिल्ली के लिए %आपदा% (आप-दा) करार दे दिया, क्योंकि यह सरकार विभिन्न महत्वपूर्ण केंद्रीय योजनाओं को दिल्ली में लागू ही नहीं होने देती थी। वहीं, कानून-व्यवस्था पर केंद्र सरकार को घेरती रहती थी, क्योंकि दिल्ली पुलिस गृह मंत्रालय के अंतर्गत होता है।

हालांकि, जब भाजपा ने आरएसएस के सहयोग से आप को दिल्ली की गली-कूची में घेरना शुरू किया, तब स्थिति बदलती। छठ पूजा के खिलाफ अरविंद केजरीवाल की सोच भी उनपर भारी पड़ी। कांग्रेस के खिलाफ सपा, तृणमूल कांग्रेस, शिवसेना यूटीबी आदि का समर्थन भी आप को भारी पड़ा, क्योंकि इनकी पहचान मुस्लिम परस्त और देशद्रोही पार्टी की बनती जा रही है। वहीं, दिल्ली के दंगों को, शाहीन बाग जैसे धरनों और किसान आंदोलन जैसे महानगर विरोधी आंदोलनों को प्रत्यक्ष-परोक्ष समर्थन देना भी अरविंद केजरीवाल की राजनीति को भारी पड़ी।

सच कहूं तो सियासी शिल्पकार भाजपा ने दिल्ली के राजनीतिक दंश को दूर करने के लिए एक सुनियोजित रणनीति अपनाई, जिसमें हरियाणा से लेकर महाराष्ट्र तक के अनुभवों को पिरोया। किसी भी व्यक्ति को मुख्यमंत्री का चेहरा बनाने की जगह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम पर चुनाव लड़ना, वोट करना लोगों को अपील कर गया।

आम आदमी पार्टी की हार, भाजपा की सरकार

सुरेश हिंदुस्तानी

कहा जाता है कि जिसको जल्दी सफलता मिलती है, वह उस सफलता को यथावत नहीं रख सकता। जिसको संघर्ष के बाद सफलता मिलती है, वह स्थायित्व को प्राप्त कर सकती है, क्योंकि संघर्ष करने से अनुभव आता है। अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी को ऐसी ही सफलता मिली, जिसे संभालने का राजनीतिक अनुभव उनके पास नहीं था। लोक लुभावन वादे एक निश्चित अवधि तक ही सुख का अनुभव करा सकते हैं, वह लम्बे समय तक सफलता का आधार नहीं बन सकता। दिल्ली के विधानसभा चुनाव में लगभग यही दिखाई दिया। केजरीवाल को बिना लम्बे परिश्रम के सत्ता मिल गई, जिसे वे स्थायित्व नहीं दे सके। वे खुद भी चुनाव हार गए और उनके बाद आम आदमी पार्टी में दूसरे नंबर पर आने वाले नेता मनीष सिसोदिया को भी पराजय का सामना करना पड़ा।

दिल्ली राज्य में विधानसभा की तस्वीर लगभग साफ हो चुकी है। इसमें अब तक अपने आपको अपराजेय मान रही आम आदमी पार्टी को बहुत बड़ी निराशा हाथ लगी है। भारतीय जनता पार्टी ने स्पष्ट बहुमत प्राप्त करने के साथ ही सरकार बनने का रास्ता साफ कर दिया है। चुनाव परिणाम के बारे में अध्ययन किया जाए तो यह ध्यान में आता है कि आम आदमी पार्टी का सबसे ज्यादा नुकसान कांग्रेस ने किया है। इससे विपक्ष का वोट विभाजित हो गया। इसका आशय यह भी है कि पिछले चुनाव में आम आदमी पार्टी को जो आशातीत समर्थन मिला, वह समर्थन केवल आम आदमी पार्टी और उसके नेताओं के प्रति पूरा समर्थन नहीं था। कहा जाता है कि पिछले चुनाव में अगर कांग्रेस का अंदरूनी समर्थन नहीं होता तो आम आदमी पार्टी राजनीतिक आकाश में चमक नहीं बिखेर सकती थी। इस पर एक बात कहना बहुत ही आवश्यक है कि जो दूसरों की शक्ति से चमकते हैं, उनकी चमक लम्बे समय तक नहीं रहती। केजरीवाल की आम आदमी पार्टी की चमक ऐसी ही थी। जहां तक पंजाब में सरकार बनाने की बात है तो यही कहना समुचित होगा कि वहां चुनाव के समय दिल्ली की योजनाओं को प्रचारित किया गया, जिसका राजनीतिक लाभ आम आदमी पार्टी को मिला।

दिल्ली के विधानसभा चुनाव परिणाम का अध्ययन किया जाए तो यही परिलक्षित होता है कि इस बार अरविन्द केजरीवाल ने कांग्रेस को आईना दिखाने के प्रयास में अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारने का ही काम किया है। अगर अरविन्द केजरीवाल कांग्रेस की बात मानकर गठबंधन कर लेते तो चुनाव परिणाम की तस्वीर कुछ और ही होती, लेकिन अरविन्द केजरीवाल का अहंकार ही उनको ले डूबा। हम जानते हैं कि एक बार आम आदमी पार्टी के नेता अरविन्द केजरीवाल ने सार्वजनिक तौर पर कहा था कि मोदी जी दिल्ली में आम आदमी पार्टी को इस जन्म में तो आप हरा नहीं सकते। ऐसी भाषा को सुनकर यही लगता है कि केजरीवाल को अहंकार हो गया था। दूसरी बड़ी बात यह है कि उन पर भ्रष्टाचार के बड़े आरोप लगे थे, इन सब आरोपों पर उन्होंने हमेशा भाजपा पर निशाना साधने का काम किया। जबकि यह सारा काम जांच एजेंसियों और सर्वोच्च न्यायालय ने किया। अरविन्द केजरीवाल को जेल भेजने का निर्णय सर्वोच्च न्यायालय का था, लेकिन उनका आरोप भाजपा पर था। दिल्ली की जनता ने केजरीवाल की इस बात को

झूंठ ही माना। आम आदमी पार्टी के नेता अरविंद केजरीवाल इस तथ्य को भूल गए कि भारतीय जनता पार्टी का भी दिल्ली में व्यापक राजनीतिक प्रभाव है। लोकसभा के चुनाव में भाजपा को दिल्ली की सभी सीट प्राप्त होना, इसको प्रमाणित भी करता है। विधानसभा में भाजपा को भले ही कम सफलता मिली हो, लेकिन इससे भाजपा के राजनीतिक प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता। बड़ी बात यह भी है कि भाजपा ने भी इस चुनाव को आम आदमी पार्टी की तर्ज पर ही लड़ा। भाजपा ने लोहे को लोहे से काटने की रणनीति पर काम किया, जिसमें भाजपा ने बाजी मार ली।

दिल्ली के चुनाव में इस बार जिस प्रकार से आधुनिक संचार तकनीक का प्रयोग किया गया, उसने भी केजरीवाल की कथनी और करनी की भिन्नता को ही उजागर किया। केजरीवाल एक बात पर टिके दिखाई नहीं दिए। वे कभी कुछ तो कभी उसके विपरीत दिखाई दिए। यमुना साफ करने के नाम पर बार बार वादे करना आम आदमी पार्टी के नेता अरविंद केजरीवाल के लिए भारी पड़ गया। यह बात सही है कि वादे करना सरल है, उनको पूरा करना उतना ही कठिन है। केजरीवाल जो वादे कर रहे थे, वे वही वादे थे, जो उन्होंने दस वर्ष पूर्व किए थे। उनमें से कई बड़े वादे अब तक पूरे नहीं किए जा सके। सबसे बड़ा वादा यमुना साफ करने का ही था। इसके अलावा भ्रष्टाचार समाप्त करने के नाम पर गठित आम आदमी पार्टी के मुखिया अरविंद केजरीवाल खुद ही भ्रष्टाचार के आरोप में जेल की हवा खा चुके थे।

हद तो तब हो गई, ज़ब वे अपनी सरकार को जेल से ही चलाने लगे। उधर उनको ज़मानत मिलने पर सर्वोच्च न्यायालय ने यह स्पष्ट निर्देश दिया कि केजरीवाल न तो मुख्यमंत्री कार्यालय में जा सकते हैं और न ही किसी फ़ाइल पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। केजरीवाल अभी भी आरोपी हैं, इसलिए उनका मुख्यमंत्री बनना असंभव ही था, क्योंकि अगर वे चुनाव जीतते तो बिना काम के मुख्यमंत्री ही रहते। ये सब भ्रष्टाचार के आरोप के कारण ही हुआ। वहीं दूसरी तरफ केजरीवाल के राजनीतिक गुरु के रूप प्रचारित समाजसेवी अण्णा हजारे इस चुनाव में केजरीवाल से रूठे से दिखाई दिए। इसको केजरीवाल के विरोधियों ने एक राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया, जो सही निशाने पर जाकर लगा है।

दिल्ली चुनाव के बारे में मतदान के बाद किए गए सर्वेक्षण परिणाम को पुष्ट करते दिखाई दे रहे हैं। हालांकि सर्वेक्षण कई बार गलत भी साबित हुए हैं, लेकिन इस बार का सर्वेक्षण सटीक होकर वही तस्वीर दिखा रहे हैं, जो उन्होंने देखा। इससे ऐसा लगता है कि अरविन्द केजरीवाल की आम आदमी पार्टी अपना स्वयं का परीक्षण करने में चूक गए।

जहरीली महुआ शराब पीने से 7 मौतें, 4 गंभीर

मरने वालों में सरपंच का भाई भी, बिलासपुर में पहले 3,फिर एक साथ 4 ने तोड़ा दम

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में जहरीली महुआ शराब पीने से सरपंच के भाई समेत 7 लोगों की मौत हो गई, जबकि 4 की हालत गंभीर है, जिनका सिम्स में इलाज जारी है। हालांकि मौत की असल वजह पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद साफ होगी। घटना कोनी थाना क्षेत्र के लोफन्दी की है।

जानकारी के मुताबिक, बुधवार को पहले एक की मौत हुई, फिर दो लोगों की जान गई, तब बीमारी समझकर उनका अंतिम संस्कार कर दिया गया था। फिर शुक्रवार की रात एक साथ चार लोगों की मौत हुई, तब कई दिनों से महुआ शराब पीने की सूचना मिली। मरने वाले सभी एक ही गांव के रहने वाले थे।

हालांकि प्रशासन का कहना कि ग्रामीणों ने शादी में सामूहिक भोज किया था। इसके अलावा कुछ लोगों ने नदी किनारे मछली खाया था। अभी मामले की जांच जारी है। वहीं कांग्रेस ने मामले की जांच के लिए 6 सदस्यीय जांच टीम गठित की है।

पुलिस ने केवल एक शव का कराया पीएम: पुलिस की टीम जब गांव पहुंची, तो 3 शवों को परिजनों ने मुक्तिधाम ले जाकर अंतिम संस्कार कर दिया। लेकिन पुलिस ने इन शवों को पीएम कराने के लिए रोकने की कोशिश नहीं की। पुलिस का कहना है कि, परिजन उनके शवों का पोस्टमॉर्टम कराने के लिए तैयार नहीं थे। इसलिए केवल एक ही शव को पीएम के लिए भेजा गया।

लोफन्दी सरपंच के भाई की भी गई जान: जहरीली शराब पीने से जान गंवाने वालों में सरपंच रामाधार सुनहले का भाई रामू सुनहले भी शामिल है। स्थानीय निवासी जैजै राम पटेल का कहना है कि, 7 से 8 लोगों की मौत हुई है, जबकि चार लोग सिम्स में भर्ती हैं। बताया जा रहा है कि जहरीली शराब पीने से उनकी मौत हुई है। पुलिस और अधिकारियों की टीम मौके पर पहुंचकर मामले की जांच कर रही है।

पिछले 3-4 दिनों से हो रही थी मौत: स्थानीय लोगों के मुताबिक, लोफन्दी गांव में महुआ शराब पीने के बाद पिछले तीन-चार दिन से लोग बीमार पड़ रहे थे। इस दौरान एक-एक कर 3 लोगों की मौत हो गई, तब उन्हें यह नहीं पता चला कि, उनकी मौत शराब पीने से हुई है। शुक्रवार को जब एक साथ चार लोगों की मौत हुई, तब जहरीली शराब पीने से मौत का पता चला। तब तक गांव में मरने वाले तीन लोगों का अंतिम संस्कार किया जा चुका था। अभी एक शव का पोस्टमॉर्टम कराया जा रहा है।

गांव और आसपास के इलाके में बिक रही शराब: लोगों का आरोप है कि, पिछले 8-10 साल से गांव में महुआ शराब की बिक्री हो रही है। आबकारी और पुलिस की टीम आती है, लेकिन मामले को रफा-दफा कर दिया जाता है। शिकायत के बाद कभी-कभी दिखावे की कार्रवाई की जाती है। यही वजह है कि अवैध शराब की बिक्री जारी है।

कुछ भी कहने से बच रहे पुलिस अफसर: घटनास्थल पर टीआई नवीन देवांगन और एएसपी राजेंद्र जायसवाल ने दैनिक भास्कर से बातचीत में कुछ भी बोलने से इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि, मामले में जांच और पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के बाद ही कुछ कहा जा सकता है।

आबकारी विभाग छोड़ सभी मौजूद: जहरीली महुआ शराब पीने से सात लोगों की मौत होने के बाद प्रशासन भी सकते में आ गया है। गांव में जिला प्रशासन से लेकर पुलिस, राजस्व, स्वास्थ्य विभाग के साथ ही नगर निगम के अफसर मौजूद हैं। लेकिन, जिस विभाग पर अवैध शराब की बिक्री रोकने की जिम्मेदारी है, उस आबकारी विभाग के अफसर गांव नहीं पहुंचे हैं।

कांग्रेस ने 6 सदस्यीय जांच टीम बनाई: कांग्रेस ने मामले की जांच के लिए पीसीसी अध्यक्ष दीपक बैज के नेतृत्व में जांच टीम गठित की है। विधायक दिलीप लहरिया को जांच टीम का संयोजक बनाया गया है। टीम के सदस्य प्रभावित गांव का दौरा करेंगे। वहां लोगों से चर्चा कर रिपोर्ट तैयार कर प्रदेश कांग्रेस कमेटी को सौंपेंगे।

जनकपुर एवं झगराखाण्ड की ईवीएम कमिशनिंग प्रक्रिया पूरी कर मतदान केंद्रों के लिए भेजा गया

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले में नगरीय निकाय चुनाव 2025 के लिए जनकपुर एवं झगराखाण्ड की ईवीएम कमीशनिंग प्रक्रिया पूरी कर ली गई। राज्य निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिला मुख्यालय स्थित वेयरहाउस गोदाम, पानी टंकी के पास स्थित पुराने बालक प्राथमिक शाला मनेंद्रगढ़ में बनाए गए ईवीएम गोदाम को प्रवेक्षक एवं जिला निर्वाचन अधिकारी तथा ईवीएम नोडल अधिकारी की उपस्थिति में 07 फरवरी को सुबह 10:30 बजे खोला गया।

नगर पालिका और नगर पंचायत चुनावों की निष्पक्षता और पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए यह प्रक्रिया निर्वाचन आयोग के दिशानिर्देशों के अनुरूप पूरी की गई। इस दौरान सभी संबंधित अधिकारियों और कर्मचारियों को ईवीएम संचालन की विस्तृत जानकारी दी गई। मास्टर ट्रेनरों द्वारा ईवीएम की बैलेट यूनिट और कंट्रोल यूनिट की कार्यप्रणाली को विस्तार से समझाया गया, ताकि मतदान प्रक्रिया में कोई तकनीकी बाधा न आए।

कमीशनिंग और रेंडमाइजेशन के बाद नगर पंचायत जनकपुर के 15 मतदान केंद्रों के लिए 50 बैलेट यूनिट और 30 कंट्रोल यूनिट आवंटित किए गए, इसके साथ ही झगराखण्ड की 15 मतदान केन्द्रों के लिए 48 बैलेट यूनिट और 27 कंट्रोल यूनिट आवंटित किए गए, जिन्हें निर्धारित स्थल पर भेजा गया। इस पूरी प्रक्रिया के दौरान रिटर्निंग अधिकारी, सेक्टर अधिकारी, राजस्व निरीक्षक (आरआई), पटवारी और अन्य संबंधित कर्मचारी मौजूद रहे।

पागल कुत्ते के काटने से फैला रेबीज, बच्चे की मौत

मीडिया ऑडीटर, सरगुजा (एजेंसी)। पागल कुत्ते के काटने के बाद पांच वर्षीय बच्चे के परिजन उसे एंटी रेबीज इंजेक्शन लगवाने के बजाय झाड़फूंक और जड़ी-बूटी से इलाज करा रहे थे। 50 दिनों बाद बच्चे की मौत हो गई। अंबिकापुर के मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल में पीड़ित बच्चे का इलाज चल रहा था। रेबीज के लक्षण सामने आने के बाद परिजन उसे लेकर मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल पहुंचे थे। सरगुजा के मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल में हर साल 200 से अधिक लोग कुत्तों के काटने पर इलाज के लिए पहुंचते हैं।

जानकारी के मुताबिक, बलरामपुर जिले के राजपुर थाना अंतर्गत ग्राम कर्रा निवासी बलिंदर उरांव के 5 वर्षीय बेटे अभिषेक लकड़ा को 15 दिसंबर की सुबह 7.00 बजे घर के बाहर खेलने के दौरान पागल कुत्ते ने काट लिया था। कुत्ते के काटने पर बच्चे के पैर में घाव हो गया था। परिजन उसका झाड़फूंक और जड़ी-बूटी से इलाज करा रहे थे।

सेंट्रल यूनिवर्सिटी में भर्ती का नया विवाद पहुंचा हाईकोर्ट

सीयू ने शपथपत्र में कहा- सभी दैनिक वेतनभोगी नियमित, रिक्त पदों पर भर्ती के खिलाफ याचिका

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। बिलासपुर के गुरु घासीदास सेंट्रल यूनिवर्सिटी में भर्ती को लेकर एक नया विवाद शुरू हो गया है। इस मामले में दायर याचिका पर यूनिवर्सिटी ने शपथपत्र देकर कहा है कि कोर्ट के आदेश पर सभी दैनिक वेतनभोगी कर्मचारी नियमित किए जा चुके हैं। सभी लोअर डिवीजन क्लर्क के पद पर काम कर रहे हैं।

इस पर याचिकाकर्ताओं की तरफ से पे-स्लीप दिया गया, जिसमें उन्हें दैनिक वेतनभोगी कर्मचारी बताया गया है। कोर्ट ने इस मामले में यूनिवर्सिटी को स्थिति स्पष्ट करने के लिए कहा है। मामले की सुनवाई जस्टिस एके प्रसाद की सिंगल बेंच में हुई। दरअसल, गुरुघासीदास यूनिवर्सिटी में तृतीय और चतुर्थ वर्ग के पदों पर नई भर्ती के लिए प्रक्रिया शुरू की गई है, जिसे चुनौती देते हुए यूनिवर्सिटी के दैनिक वेतनभोगी कर्मचारियों ने याचिका दायर की है। इसमें बताया गया है कि यूनिवर्सिटी में 13 साल से अधिक समय से कार्यरत दैनिक वेतनभोगी कर्मचारियों को अब तक नियमित नहीं किया गया है।

जिस पर कर्मचारियों ने हाईकोर्ट में याचिका दायर की थी। हाईकोर्ट ने कर्मचारियों के पक्ष में फैसला दिया है। इसके बाद भी अदालत के आदेश पर उन्हें नियमित नहीं किया गया है। वहीं, अब यूनिवर्सिटी प्रशासन तृतीय और चुतर्थ श्रेणी के पदों पर नई भर्ती कर रहा है। इस प्रक्रिया से इन दैनिक वेतनभोगियों का हित प्रभावित होगा।

यूनिवर्सिटी के वकील बोले- नियमित हो चुके हैं कर्मचारी: इस मामले की सुनवाई जस्टिस एके प्रसाद की सिंगल बेंच में हुई। इस दौरान याचिकाकर्ता के एडवोकेट दीपाली पांडेय की आपत्ति पर यूनिवर्सिटी की तरफ से एडवोकेट आशीष श्रीवास्तव ने कोर्ट से कहा कि हाईकोर्ट ने जो आदेश दिया था, उसके बाद से सभी कर्मचारी नियमित होंगे।

आदेश के अनुसार सभी कर्मचारी पहले से ही नियमित हैं और उन्हीं पदों पर काम कर रहे हैं। उन्हें नहीं निकाला जा रहा है और न ही उन्हें कोई नुकसान होगा। केवल भविष्य की संभावनाओं के आधार पर याचिका लगाई गई है। इस पर याचिकाकर्ता के एडवोकेट दीपाली पांडेय ने कहा कि अब तक इन सभी को वास्तविक तौर पर नियमित नहीं किया गया है, जो पे-स्लिप दी जा रही है। उसमें अभी भी दैनिक वेतनभोगी लिखा जा रहा है। यह स्थिति स्पष्ट की जानी चाहिए।

सुप्रीम कोर्ट से एसएलपी खारिज, हाईकोर्ट में चल रही है अवमानना याचिका: एडवोकेट दीपाली पांडेय ने बताया कि हाईकोर्ट के आदेश के खिलाफ यूनिवर्सिटी प्रबंधन ने सुप्रीम कोर्ट में एसएलपी दायर की थी, जिसे सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस ऋषिकेश रॉय और जस्टिस प्रशांत मिश्रा की बेंच ने खारिज कर दी थी। साथ ही कहा था कि दो दशकों से अधिक समय से काम कर रहे दैनिक वेतनभोगियों को नियमित करने के मामले में हाईकोर्ट के आदेश पर हस्तक्षेप करने का कोई ठोस कारण नहीं दिख रहा है। जिसके बाद कर्मचारियों की तरफ से हाईकोर्ट में न्यायालय की अवमानना याचिका भी दायर की गई है।

भाजपा पर आचार संहिता के उल्लंघन का आरोप

कांग्रेस मेयर प्रत्याशी बोले- बिजली पोल-सरकारी भवनों में लगाए पोस्टर, स्ट्रॉग-रूम में लगाएं सीसीटीवी कैमरे

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। कांग्रेस के महापौर प्रत्याशी प्रमोद नायक ने भाजपा प्रत्याशी एल पद्मजा उर्फ पूजा विधानी पर आचार संहिता के उल्लंघन करने का आरोप लगाया है। उन्होंने जिला निर्वाचन अधिकारी और ऑब्जर्वर विनीत नंदनवार से शिकायत भी की है।

उन्होंने कहा कि भाजपा उम्मीदवार ने चुनाव आयोग के निर्देश के बाद भी शहर के बिजली के खंभों के साथ ही सरकारी भवनों में बैनर-पोस्टर लगाए हैं। संपत्ति विरूपण अधिनियम के तहत ऐसा नहीं किया जा सकता। मेयर प्रत्याशी नायक ने अपनी शिकायत के साथ वीडियो और फोटो भी सौंपा है। इसके साथ ही उन्होंने कोनी स्थित स्ट्रॉन्ग रूम में सीसीटीवी कैमरे लगाने की मांग भी की है। नगर निगम चुनाव में कांग्रेस के प्रत्याशी और पार्टी के नेता जिला प्रशासन के अफसरों पर भाजपा के दबाव में काम करने का लगातार आरोप लगा रहे हैं। नायक ने अपनी शिकायत में बताया है कि पूरे शहर के बिजली के पोल और सरकारी भवनों में भाजपा की महापौर प्रत्याशी के साथ ही पार्षद प्रत्याशियों की फोटो वाले बैनर-पोस्टर लगाए गए हैं।

निगम प्रशासन पर एक पक्षीय कार्रवाई करने का आरोप: सरकारी संपत्ति में भाजपा के झंडे नजर आ रहे हैं। इन्हें तत्काल हटाया जाए। नायक ने कहा कि किसी भी पार्टी या निर्दलीय प्रत्याशी द्वारा आचार संहिता के उल्लंघन की स्थिति में आदर्श आचार संहिता का पालन कराने की जिम्मेदारी जिला निर्वाचन अधिकारी और ऑब्जर्वर की होती है। लेकिन, शहर में केवल भाजपा प्रत्याशियों के ही बैनर-पोस्टर सरकारी भवनों और बिजली पोल पर लगा है। जिस पर निगम प्रशासन कोई कार्रवाई नहीं कर रहा है। कांग्रेस प्रत्याशी नायक ने कहा कि तत्काल बैनर -पोस्टर बिजली के पोल और सरकारी भवनों से नहीं हटाया जाता है, तो राज्य निर्वाचन आयोग से इसकी शिकायत की जाएगी।

स्ट्रॉन्ग रूम में सीसीटीवी कैमरे लगाने की मांग: कांग्रेस के महापौर प्रत्याशी प्रमोद नायक के निर्वाचन अभिकर्ता मनीष श्रीवास्तव ने जिला निर्वाचन अधिकारी से इंजीनियरिंग कॉलेज कोनी के स्ट्रॉन्ग रूम में सीसीटीवी कैमरे लगाने की मांग की है। शुक्रवार को जिला निर्वाचन अधिकारी को लिखे गए पत्र में श्रीवास्तव ने कहा कि स्थानीय निकाय चुनाव के लिए कोनी इंजीनियरिंग कालेज में स्ट्रॉन्ग रूम बनाया गया है। वहां पर ईवीएम मशीन रखी गई। चुनाव पूरे होने के बाद भी मशीनों को स्ट्रॉन्ग रूम में ही रखा जाएगा। मशीनों की निगरानी और सुरक्षा के लिए इंजीनियरिंग कॉलेज परिसर में सीसी टीवी कैमरा लगाया जाए। ताकि उस परिसर आने-जाने वालों की पूरी जानकारी रिकॉर्ड में रहे। साथ ही मशीनों की निगरानी सही ढंग से हो सके। कोई भी बाहरी व्यक्ति का आना-जाना न हो। साथ ही सुरक्षा की दृष्टि से भी यह जरूरी है।

ट्रक ने बाइक सवार का सिर कुचला, मॉल के पार्किंग में काम करता था युवक, घर से खाना खाकर वापस लौट रहा था

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। राजधानी रायपुर में एक ट्रक ने बाइक सवार का सिर कुचल दिया है। युवक तेलीबांधा स्थित मॉल के पार्किंग में काम करता था। दोपहर के वक्त वह लंच करने के लिए घर आया था। फिर वह वापस ड्यूटी पर लौट रहा था इस दौरान हादसा हो गया। फिलहाल तेलीबांधा पुलिस ने लाश को पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया है। इसके अलावा आसपास आईटीएमएस कैमरों की मदद से आरोपी वाहन चालक की तलाश की जा रही है।

तेलीबांधा पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक, यह घटना दोपहर 1 बजे के आसपास की है। मृतक की पहचान रमेश जोशी वर्तमान निवासी लाभांडी के तौर पर हुई है। रमेश तेलीबांधा के ही एक मॉल में पार्किंग में काम करता था। शनिवार दोपहर वह लंच करने के लिए लाभांडी के घर गया था। वहां से वह वापस बाइक से ड्यूटी पर लौट रहा था। इस दौरान पीछे से आ रही एक तेज रफ्तार ट्रक ने युवक को टक्कर मार दी।

हादसे में युवक का सिर बुरी तरह कुचला: एक्सीडेंट होते ही युवक सड़क पर जा गिरा। जिससे उसका सिर बुरी तरह कुचला गया। उसकी मौके पर ही मौत हो गई। इस घटना के बाद आरोपी वाहन चालक फरार हो गया। आसपास से गुजर रहे लोगों ने पुलिस को सूचना दी। युवक की पहचान कर परिजनों को भी बुलवाया गया। इस मामले में पुलिस पोस्टमार्टम के बाद लाश परिजनों को सौंपेगी। इसके अलावा पुलिस आरोपी ड्राइवर की तलाश कर रही है।

रायपुर के कल्याण ज्वेलर्स शोरूम में फंसे ग्राहक

महिलाएं-बच्चे 1 घंटे तक हुए परेशान, शटर काटकर निकाला गया बाहर, स्टाफ ने मीडियाकर्मियों से की बदसलूकी

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। रायपुर के पंडरी स्थित कल्याण ज्वेलर्स शोरूम का शटर लॉक होने से लोग अंदर फंस गए। करीब 1 घंटे से ज्यादा समय तक औरतें और बच्चे परेशान होते रहे। शटर इस कदर जाम हुआ कि वह न तो ऊपर उठा पा रहा था, ना कोई अंदर जा पा रहा था ना कोई बाहर आ रहा था। जब मीडियाकर्मी मौके पर पहुंचे तो रिपोर्टर्स के साथ शोरूम के स्टाफ ने बदसलूकी की। शोरूम में यह हादसा शनिवार रात करीब 9:00 बजे के आसपास हुआ। शोरूम की ओर से पुलिस को सूचना नहीं दी गई। भीतर से कोई भी फायर एग्जिट का रास्ता भी नहीं था। जिससे लोगों को बाहर निकाला जा सके।

शटर काटकर ग्राहकों को निकाला गया बाहर: कुछ देर बाद शटर काटने वालों को बुलाया गया। शटर का एक बड़ा हिस्सा काटने के बाद इसी जगह से लोगों को बाहर निकला गया। इस दौरान मीडियाकर्मी रिपोर्टिंग करने पहुंचे। यह देखकर कल्याण ज्वेलर्स के स्टाफ ने रायपुर प्रेस क्लब के उपाध्यक्ष संदीप शुक्ला का मोबाइल फोन छीन लिया।

हमला करने की कोशिश भी की और गाली-गलौज करने लगे। सिविल लाइस थाना पुलिस ने इस मामले में दो कर्मचारी अखिल ए और पवन तिवारी को गिरफ्तार कर लिया है। शटर किस वजह से लॉक हुआ इसकी जांच सिविल लाइन थाने की पुलिस कर रही है।

नाला बनाने खोदा गड्ढा, गली में पड़ा मलबा

आचार संहिता से पहले जारी किया वर्क आर्डर, हाईकोर्ट ने निगम कमिश्नर से मांगा शपथपत्र

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। बिलासपुर में नगर निगम चुनाव के लिए आचार संहिता लागू होने से पहले आनन-फानन में वर्क आर्डर जारी कर दिया। जिसके बाद ठेकेदार ने नाले की खुदाई करते हुए सड़क पर मलबा छोड़ दिया। इससे लोगों को आने-जाने में परेशानी होने लगी है। इस मामले को हाईकोर्ट ने जनहित याचिका मानकर सुनवाई शुरू की है। चीफ जस्टिस रमेश सिन्हा व जस्टिस रवींद्र अग्रवाल की डिवीजन बेंच ने मामले में निगम आयुक्त से शपथपत्र के साथ जवाब मांगा है। दरअसल, नगर निगम ने आचार संहिता लागू होने से पहले वार्ड क्रमांक 19 कस्तूरबा नगर में नाला निर्माण के लिए करीब 70 मीटर लंबे नाले के निर्माण के लिए टेंडर की प्रक्रिया पूरी होने के बाद वर्क ऑर्डर जारी किया। जिस ठेकेदार को काम दिया गया है, उन्होंने नाले की खुदाई भी शुरू कर दी और मलबा को गली में मलबा रख दिया है। यहां लोगों के घर से निकलने और आने-जाने के लिए वैकल्पिक व्यवस्था भी नहीं की गई है।

निगम के अफसरों ने नहीं दिया ध्यान, 15 परिवारों की बढ़ी मुसीबतें: ठेकेदार ने मलबा गली के किनारे पर छोड़ दिया है, जिसके कारण गली में आने-जाने का रास्ता भी नहीं बचा है। किसी तरह मुश्किल से लोग कीचड़ के बीच आना-जाना कर रहे हैं। कई घरों के ठीक सामने गड्ढा खोद दिया गया है, जिससे वहां रहने वालों का निकलना मुश्किल हो गया है। इस कारण करीब 15 घरों में रहने वाले लोग अपने घरों के अंदर रहने पर मजबूर हैं। वार्ड पार्षद चुनाव में व्यस्त हैं तो वहीं, जिम्मेदार अधिकारी भी कोई ध्यान नहीं दे रहे हैं। प्रकाशित फोटो को हाईकोर्ट ने जनहित याचिका मानकर सुनवाई शुरू की है।

निगम ने दिया जवाब- हटा दिया गया है मलबा: शुक्रवार को मामले की सुनवाई को दौरान नगर निगम की तरफ से बताया गया कि नाली की खुदाई के बाद पड़ा मलबा हटा दिया गया है। जिसके बाद गली चलने लायक हो गई है। हालांकि, कोर्ट ने पाया कि गली के एक किनारे पर मलबा पड़ा हुआ है।

पंचायत चुनाव को लेकर बैठक, 17 फरवरी को मस्तूरी ब्लॉक में वोटिंग, स्ट्रांग रूम तैयार, कलेक्टर-एसपी ने लिया जायजा

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। बिलासपुर जिले में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव की तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। मस्तूरी ब्लॉक में 17 फरवरी को होने वाले मतदान के लिए पचपेड़ी आईटीआई भवन में स्ट्रांग रूम की व्यवस्था की गई है।

स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करने के लिए कलेक्टर अवनीश शरण और एसपी रजनेश सिंह ने आज विस्तृत समीक्षा की। कलेक्टर और एसपी ने शुक्रवार को मस्तूरी ब्लॉक के सचिवों और कोटवारों के साथ बैठक की।

मतदान केंद्रों में उचित व्यवस्था के निर्देश: बैठक में निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशों का पालन सुनिश्चित करने पर जोर दिया गया। मतदान केंद्रों में बिजली, पानी और स्वच्छता की उचित व्यवस्था के निर्देश दिए गए। मतदाताओं की सुविधा के लिए संकेतक चिन्हों की व्यवस्था भी की जाएगी।

'चुनाव के दौरान गुंडागर्दी बर्दाश्त नहीं': चुनाव प्रक्रिया को सुचारू बनाने के लिए मतदाता जागरूकता अभियान 'जाबो' के तहत घर-घर जाकर लोगों को मतदान के लिए प्रेरित किया जाएगा। एसपी ने स्पष्ट किया कि चुनाव के दौरान किसी भी प्रकार की गुंडागर्दी बर्दाश्त नहीं की जाएगी और आचार संहिता का कड़ाई से पालन कराया जाएगा।

स्ट्रांग रूम की व्यवस्था: प्रशासन ने ग्रामीण मतदान के लिए डीएवी परसदा स्कूल और नगरीय निकाय चुनाव के लिए मल्हार स्थित जवाहर नवोदय विद्यालय में स्ट्रांग रूम की व्यवस्था की है। बैठक में सीईओ जिला पंचायत संदीप अग्रवाल, एसडीएम प्रवेश पैकरा, जनपद सीईओ भगत और तहसीलदार सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

उद्धव ठाकरे का भाजपा-शिंदे को चैलेंज

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में शिवसेना के कुछ सदस्यों के एकनाथ शिंदे की शिवसेना में शामिल होने की खबरों पर पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने शुक्रवार को कहा कि हम आपको (शिवसेना और भाजपा) दिखाएंगे कि असली शिवसेना कौन सी है। अगर आप हमें तोड़ने की कोशिश करेंगे तो हम आपका सिर फोड़ देंगे। ठाकरे ने कहा- अगर आप (एकनाथ शिंदे और भाजपा) मर्द की औलाद हैं तो ईडी, सीबीआई आयकर और पुलिस को एक तरफ रख दें और हमारे साथ आकर लड़ें। कहा गया कि यूबीटी शिवसेना के 7 सांसद जा रहे हैं। मैं चैलेंज करता हूं कि सरकारी यंत्रणा को दूर रखो और एक भी शिव सैनिक तोड़कर दिखाओ। शिवसेना में टूट की खबरों के बीच उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र का चुनाव इन्होंने फरेब से जीता है। फर्जी वोटर बनाए गए, लाखों की संख्या में नए वोटर तैयार किए गए। इसकी जांच होनी चाहिए।

महाकुंभ में दो सीएम ने एक साथ डुबकी लगाई

प्रयागराज (एजेंसी)। महाकुंभ में शनिवार को दो मुख्यमंत्री राजस्थान के भजनलाल शर्मा और मध्य प्रदेश के मोहन यादव पहुंचे। दोनों मुख्यमंत्रियों ने संगम में एक साथ डुबकी लगाई। भजनलाल अपने 115 विधायकों के साथ आए हैं। राजस्थान मंडपम में राजस्थान कैबिनेट की बैठक हुई। वहीं, पूर्व केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने भी अपनी पत्नी के साथ संगम स्नान किया। आज एकादशी और शनिवार होने की वजह से संगम पर श्रद्धालुओं की काफी भीड़ है। संगम पर श्रद्धालुओं को रुकने नहीं दिया जा रहा। पुलिस स्नान के बाद श्रद्धालुओं को वहां से निकाल रही है। प्रयागराज-वाराणसी और नैनी से आने वाली सड़क पर 4-4 किमी तक जाम लगा है। शहर में भी जगह-जगह जाम की स्थिति है। श्रद्धालुओं का कहना है- पैदल बहुत चलना पड़ रहा है। हमारी गाड़ियों को 12 किमी पहले ही रोक दिया गया है। वहां से हम लोग पैदल आ रहे हैं। आज शाम 6 बजे तक 1.22 करोड़ श्रद्धालुओं ने डुबकी लगाई। 13 जनवरी से अब तक 40.68 करोड़ श्रद्धालु स्नान कर चुके हैं। अभी मेला 18 दिन और चलेगा। वहीं, महाकुंभ से अखाड़े वापस जाने लगे हैं। कल्पवासी भी घर लौटने लगे हैं। इसके लिए नया ट्रैफिक प्लान लागू किया गया है। 8 फरवरी की रात 8 बजे से 9 फरवरी की सुबह 4 बजे तक वाहनों को एंट्री मिलेगी।

साबरमती बुलेट ट्रेन के निर्माणाधीन स्टेशन में आग लगी

गुजरात (एजेंसी)। अहमदाबाद में बन रहे साबरमती बुलेट ट्रेन स्टेशन में आज सुबह वेल्डिंग के दौरान आग लग गई। घटना की सूचना मिलने पर 14 फायर ब्रिगेड की गाड़ियां पहुंची। जहां 2 घंटे के बाद आग पर काबू पाया जा सका। मजदूरों के मुताबिक वेल्डिंग करते का काम चल रहा था, इसी दौरान लकड़ियों में आग लग गई। हवा से आग और फैल गई।

दिल्ली में 27 साल बाद भाजपा को स्पष्ट बहुमत आप ने 40 सीटें गंवाई

भाजपा को 71 प्रतिशत स्ट्राइक रेट के साथ 40 सीटों का फायदा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा ने दिल्ली में 27 साल बाद स्पष्ट बहुमत हासिल किया। दिल्ली विधानसभा की 70 सीटों में से भाजपा ने 48 और आम आदमी पार्टी ने 22 सीटें जीतीं। कांग्रेस को एक भी सीट नहीं मिली है। भाजपा ने 1993 में 49 सीटें यानी दो तिहाई बहुमत हासिल किया था। 5 साल की सरकार में मदन लाल खुराना, साहिब सिंह वर्मा और सुषमा स्वराज सीएम बनाए गए थे। 1998 के बाद कांग्रेस ने 15 साल राज किया। इसके बाद 2013 से आम आदमी पार्टी की सरकार थी। इस बार भाजपा की 71 प्रतिशत स्ट्राइक रेट के साथ 40 सीटें बढ़ीं। पार्टी ने 68 पर चुनाव लड़ा, 48 सीटें जीतीं। वहीं,आप को 40 सीटों का नुकसान हुआ। आप का स्ट्राइक रेट 31 प्रतिशत रहा। भाजपा ने पिछले चुनाव (2020) के मुकाबले वोट शेयर में 9 प्रतिशत से ज्यादा का इजाफा किया। वहीं, आप को करीब 10 प्रतिशत का नुकसान हुआ है। कांग्रेस को भले ही एक भी सीट नहीं मिली, लेकिन वोट शेयर 2 प्रतिशत बढ़ाने में कामयाब रही। 2020 में भाजपा ने महज 8 सीटें जीती थीं। 2025 में 6 गुना ज्यादा यानी 48 से ज्यादा

सीटों पर जीती। केजरीवाल की नई दिल्ली सीट पर 20 उम्मीदवारों की जमानत तक जब्त हो गई। इन्हें मिले वोट तीन अंक तक भी नहीं पहुंच सके। दिल्ली विधानसभा चुनाव 2025 के परिणामों के अनुसार, कांग्रेस के 70 में से 68 उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो गई है। केजरीवाल को प्रवेश वर्मा ने 4089 वोटों से हराया

मोदी ने यमुना मैया की जय का नारा लगाया, कहा- इसे दिल्ली की पहचान बनाएंगे, देश की राजधानी आप-दा से मुक्त हुई

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा चुनाव में भाजपा की जीत के बाद पीएम मोदी ने भाजपा हेडक्वॉर्टर में कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। उन्होंने अपने भाषण की शुरुआत यमुना मैया की जय के नारे के साथ की। उन्होंने कहा- आज दिल्ली में दिल्ली के लोगों में एक उत्साह भी है और सुकून भी है।

उत्साह विजय का है, सुकून दिल्ली को आप-दा से मुक्त कराने का है। आपने दिल खोलकर प्यार दिया। मैं दिल्लीवालों को नमन करता हूं। मोदी ने कहा कि आपके इस प्यार को विकास के लॉन्ग रूट पर हम लौटाएंगे। दिल्ली के लोगों का ये प्यार ये विश्वास हम सभी पर एक कर्ज है।

दिल्ली की डबल इंजन सरकार दिल्ली का डबल तेजी से विकास करके ये कर्ज चुकाएगी। इससे पहले भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने पीएम मोदी का स्वागत किया। उन्होंने कहा- यह चुनाव और इससे पहले का लोकसभा चुनाव में दिल्ली की जनता ने एकमत संदेश दिया। यह संदेश है कि दिल्ली के दिल में मोदी बसता है। इस कार्यक्रम में गृहमंत्री अमित शाह, भाजपा अध्यक्ष और स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, भाजपा सांसद मनोज तिवारी और दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा समेत बड़े नेता मौजूद हैं। भाजपा ने दिल्ली में 27 साल बाद स्पष्ट बहुमत हासिल किया। दिल्ली विधानसभा की 70 सीटों में से भाजपा ने 48 और आम आदमी पार्टी ने 22 सीटें जीतीं। कांग्रेस को एक भी सीट नहीं मिली है।

अयोध्या हार का बदला, भाजपा ने सपा से मिल्कीपुर छीना

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या हार का बदला भाजपा ने मिल्कीपुर जीत कर ले लिया। 8 साल बाद सपा से मिल्कीपुर विधानसभा छीन ली। भाजपा ने मिल्कीपुर में इतिहास की सबसे बड़ी जीत दर्ज की है। भाजपा प्रत्याशी चंदभानु पासवान ने सपा के अजीत प्रसाद को 61 हजार 636 वोट से हराया। इससे पहले सपा से अवधेश प्रसाद साल 2012 में 39,237 वोट से जीते थे। उपचुनाव में चंद्रभानु पासवान को 1 लाख 46 हजार 291 और अजीत प्रसाद को 84 हजार 655 वोट मिले। बाकी सभी 8 प्रत्याशियों की जमानत जब्त हो गई। अयोध्या सांसद के बेटे होने के बावजूद अजीत प्रसाद अपने ही बूथ से हार गए। लोकसभा चुनाव में मिल्कीपुर विधानसभा में भाजपा को सपा से 7 हजार वोट कम मिले थे। 8 महीने में ही भाजपा ने बाजी पलट दी।

तीसरे नंबर पर आजाद समाज पार्टी के प्रत्याशी सूरज चौधरी रहे। उन्हें 5 हजार 457 वोट मिले। मिल्कीपुर में भाजपा पहले राउंड से ही बढ़त बनाए हुए थी। वह आखिर तक जारी रही।

एक बार भी सपा आगे नहीं निकल पाई।

डेरा प्रमुख राम रहीम सिरसा से यूपी हुआ रवाना, 28 जनवरी को आया था पैरोल पर जेल से बाहर

सिरसा (एजेंसी)। हरियाणा के सिरसा स्थित डेरा सच्चा सौदा का प्रमुख राम रहीम रोहतक की सुनारिया जेल से 30 दिन की मिली पैरोल में से 12 दिन सिरसा डेरे में बिताने के बाद शनिवार दोपहर 2.30 बजे उत्तर प्रदेश के बरनावा आश्रम के लिए रवाना हो गया। वह आठ गाड़ियों के काफिले के साथ रवाना हुआ। डेरा प्रमुख के काफिले को डेरे के पीछे की तरफ गांव नेजियाखेड़ा से बाजेकां रोड पर बने नाके से निकाला गया। गौरतलब है कि साध्वियों के यौन शोषण मामले में उम्रकैद की सजा काट रहे डेरा प्रमुख राम रहीम को 28 जनवरी को 30 दिन की पैरोल पर रिहा किया गया था। इस बार उसे 12वीं बार पैरोल मिली थी। 25 अगस्त 2017 को गिरफ्तार किए गए राम रहीम को साढ़े सात साल के दौरान पहली बार कुछ दिन के लिए सिरसा डेरे में पैरोल काटने की छूट दी गई थी। 28 जनवरी की सुबह करीब 8.30 बजे डेरा प्रमुख सिरसा डेरे में पहुंचा था। डेरा प्रमुख के सिरसा डेरे में पहुंचने के दौरान कयास लगाए जा रहे थे कि राम रहीम यहां 6 फरवरी तक रहेगा।

जहरीली महुआ शराब पीने से 7 मौतें...4 गंभीर

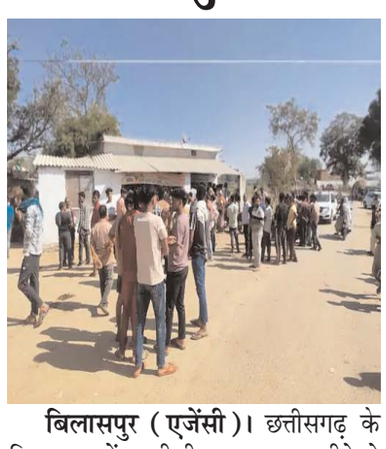

बिलासपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में जहरीली महुआ शराब पीने से सरपंच के भाई समेत 7 लोगों की मौत हो गई, जबकि 4 की हालत गंभीर है। सिम्स में इलाज जारी है। मृतकों का शरीर काला पड़ गया था। हालांकि मौत की असल वजह पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के बाद साफ होगी। घटना कोनी थाना क्षेत्र के लोफन्दी की है। मृतक रामू की बेटी पूर्णिमा ने बताया कि पापा उल्टी कर रहे थे, जिससे खून निकल रहा था। खून का थक्का जैसे काला-काला उल्टी के साथ आ रहा था। पिता को अस्पताल लेकर गए, तो रास्ते में ही धड़कनें बंद हो गई। चार लोगों की एक ही रात जान गई है। वहीं ग्रामीण ने कहा कि पुलिस हर महीने भट्ठी वालों से चंदा मिलता है। हालांकि मौतों पर प्रशासन का कहना कि ग्रामीणों ने शादी में सामूहिक भोज किया था। इसके अलावा कुछ लोगों ने नदी किनारे मछली खाया था।

टोल सिस्टम में बड़ा बदलाव! नितिन गडकरी का बड़ा ऐलान

नई दिल्ली (एजेंसी)। अगर आपको हर कुछ किलोमीटर पर टोल टैक्स देना भारी लगता है, तो जल्द ही राहत मिल सकती है। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने संकेत दिए हैं कि सरकार नेशनल हाईवे पर टोल सिस्टम में बड़े बदलाव की योजना बना रही है।

हालांकि, यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि टोल टैक्स पूरी तरह खत्म होगा या इसमें कटौती की जाएगी। लेकिन सरकार एक समान टोल नीति और ग्लोबल नेविगेशन सैटेलाइट सिस्टम (त्नह्स्स्) आधारित टोल कलेक्शन प्रणाली पर काम कर रही है, जिससे यात्रियों को टोल बूथ पर रुकने की जरूरत नहीं होगी। इसके अलावा, गडकरी ने यमुना नदी को साफ कर उसे विमान लैंडिंग स्ट्रिप में बदलने की घोषणा की है। इस प्रोजेक्ट के तहत, दिल्ली से आगरा की दूरी महज 13 मिनट में तय की जा सकेगी। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पहले गुजरात के साबरमती नदी पर सी-प्लेन सेवा शुरू की थी, और अब इसी तरह की सुविधा यमुना नदी पर लाने की योजना बनाई जा रही है।

केजरीवाल की हार पर विश्वास बोले- दिल्ली को मुक्ति मिली

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी की हार पर कवि कुमार विश्वास ने तंज कसा है। कुमार ने केजरीवाल का नाम लिए बिना कहा कि दिल्ली को आज उनसे मुक्ति मिल गई है।

मुझे उस निर्लज्ज आदमी से कोई सहानुभूति नहीं है। केजरीवाल ने व्यक्तिगत महत्वकांक्षा के लिए अन्ना आंदोलन से निकले लाखों-करोड़ों कार्यकर्ताओं के सपनों को कुचल दिया। उसने उसने आप कार्यकर्ताओं का इस्तेमाल अपनी निजी महत्वाकांक्षाओं के लिए किया है। कुमार विश्वास ने बताया कि जब मेरी पत्नी ने मनीष सिसोदिया के हारने की खबर सुनी तो वे रोने लगीं। क्योंकि मनीष ने उनसे कहा था कि अभी तो ताकत है। तब मेरी पत्नी ने मनीष से कहा था कि ताकत हमेशा नहीं रहती। विश्वास बोले- अहंकार ईश्वर का भोजन है इसके अलावा कुमार विश्वास ने एक्स पर एक वीडियो भी शेयर किया। इसमें वे केजरीवाल पर निशाना साध रहे हैं। हालांकि, वीडियो में वे किसी का नाम नहीं लिए हैं। विश्वास ने कैप्शन में लिखा, अहंकार ईश्वर का भोजन है।

दिल्ली में कांग्रेस का लगातार तीसरी बार नहीं खुला खाता, 67 सीटों पर जब्त हुई जमानत

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के नेतृत्व में 15 साल तक सरकार चलाने के बाद सत्ता से बाहर हुई कांग्रेस इस बार के विधानसभा चुनाव में कुल 70 में से सिर्फ तीन सीटों पर ही अपनी जमानत बचा सकी और लगातार तीसरी बार चुनाव में उसका खाता तक नहीं खुला। यह बात जरूर है कि देश की मुख्य विपक्षी पार्टी ने राष्ट्रीय राजधानी में पिछले विधानसभा चुनाव के मुकाबले इस बार अपनी वोट हिस्सेदारी में दो प्रतिशत से अधिक की बढ़ोतरी की है। उसने करीब 6.4 प्रतिशत वोट हासिल

किए, जबकि 2020 के विधानसभा चुनाव में उसे 4.26 प्रतिशत वोट मिले थे। कांग्रेस ने अपने इस प्रदर्शन पर निराशा जताई और साथ ही कहा कि उसने 2025 के विधानसभा चुनाव में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है और पांच साल बाद सत्ता में वापसी करेगी। कांग्रेस के जो तीन उम्मीदवार दिल्ली में अपनी जमानत बचाने में सफल रहे उनमें प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेंद्र यादव भी शामिल हैं जिन्हें 40 हजार से अधिक मत और 27 प्रतिशत से ज्यादा वोट मिले। वह तीसरे स्थान पर रहे। यदि किसी उम्मीदवार को डाले गए कुल वोटों का कम से कम छठा हिस्सा नहीं मिलता है तो जमानत स्वरूप उसके द्वारा निर्वाचन आयोग के समक्ष दी गई राशि जब्त हो जाती है।

दिल्ली चुनाव, मान के प्रचार वाली सभी सीटें हारी

अमृतसर (एजेंसी)। पंजाब में आम आदमी पार्टी सरकार के सीएम भगवंत मान ने दिल्ली में जिन-जिन सीटों पर प्रचार किया, उन सभी पर पार्टी हार गई। सीएम भगवंत मान ने यहां 12 सीटों पर प्रचार किया था। जिनमें पार्टी सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल और पूर्व डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया की सीट भी शामिल थी। हालांकि ये दोनों भी चुनाव हार गए। वहीं पंजाब विधानसभा में विपक्षी दल कांग्रेस के नेता प्रताप सिंह बाजवा ने इंडियन एक्सप्रेस से बातचीत में दावा किया कि अब अरविंद केजरीवाल पंजाब के मुख्यमंत्री बन सकते हैं। इसके लिए उन्होंने पंजाब में आप के प्रधान और मंत्री अमन अरोड़ा के उस बयान का हवाला दिया जिसमें अरोड़ा ने कहा था कि कोई हिंदू भी पंजाब का मुख्यमंत्री बन सकता है। सीएम पद को हिंदू और सिख चेहरे के बजाय, सरकार चलाने की क्षमता के हिसाब से देखा जाना चाहिए। बाजवा ने दावा किया कि लुधियाना में इनकी पार्टी के एक विधायक गुरप्रीत गोगी के निधन के बाद विधानसभा सीट भी खाली पड़ी है।

केजरीवाल पंजाब के सीएम बनेंगे...कांग्रेस नेता प्रताप सिंह बाजवा ने दिल्ली चुनाव पर दिया बड़ा बयान

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में आम आदमी पार्टी (आप) की हार के बाद पंजाब कांग्रेस के नेता प्रताप सिंह बाजवा ने मुख्यमंत्री भगवंत मान को लेकर एक बड़ा तंज कसा है। उन्होंने कहा कि भगवंत मान जल्द ही महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की तरह बगावत कर सकते हैं। बाजवा ने यह भी भविष्यवाणी की है कि दिल्ली चुनाव में मिली हार के बाद आप पार्टी में भारी उथल-पुथल होने वाली है और यह पार्टी पंजाब में भी अस्थिर हो सकती है।

बाजवा ने कहा है कि पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान अगले एकनाथ शिंदे हो सकते है। बाजवा ने दिल्ली नतीजों पर बोलते हुए कहा कह कि केजरीवाल अब पंजाब के सीएम बनेंगे। उन्होंने यह भी दावा किया कि आप में अब बड़ी उथल पुथल सामने आएगी। दिल्ली में हुई हार के बाद कांग्रेस नेता प्रताप सिंह बाजवा ने कहा कि आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल अब पंजाब में मुख्यमंत्री नहीं बन पाएंगे। उनका यह भी कहना था कि केजरीवाल की उम्मीदों को झटका लगेगा क्योंकि आप में अंदरूनी संघर्ष और बगावत शुरू हो सकती है।

इल्तिजा मुफ्ती और महबूबा मुफ्ती घर में बंद

श्रीनगर (एजेंसी)। पी.डी.पी. नेता इल्तिजा मुफ्ती ने शनिवार को कहा कि उन्हें और उनकी मां महबूबा मुफ्ती को नजरबंद कर दिया गया है। इल्तिजा मुफ्ती ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर पोस्ट कर कहा कि उन्हें और उनकी मां को नजरबंद कर दिया गया है। उनके घर के दरवाजे बंद हैं, गेट पर ताला लगाया गया है। उन्होंने आगे लिखा कि ऐसा इसलिए किया गया है क्योंकि उन्हें सोपोर जाना था जहां वसीम मीर को सेना ने गोली मार दी थी। उन्होंने कहा कि वह आज कठुआ जाकर माखन दीन के परिवार से मिलना चाहती थी, लेकिन उन्हें बाहर भी नहीं जाने दिया जा रहा है। चुनावों के बाद भी कश्मीर में कुछ नहीं बदला है। उन्होंने कहा कि अब तो पीड़ित परिवारों को सांत्वना देना भी अपराध समझा जा रहा है।

स्टीव स्मिथ ने रचा कीर्तिमान

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के खिलाफ बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी में फॉर्म हासिल करने वाले स्टीव स्मिथ टेस्ट क्रिकेट में गर्दा उड़ा दिया है। बीजीटी में टीम इंडिया की मगर तोड़ने के बाद ये धाकड़ खिलाड़ी इस समय श्रीलंका दौरे पर टीम की कमान संभाले हुआ है। यहां भी स्मिथ का ताबड़तोड़ प्रदर्शन जारी है। गाले में खेल जा रहे दूसरे टेस्ट के दौरान स्टीव स्मिथ ने नाम सिर्फ शतक जड़ा बल्कि ऐलेक्स कैरी के साथ डबल सेंचुरी पार्टनरशिप कर टीम को मजबूत स्थिति में भी पहुंचाया। शायद नहीं, तो बता दें ऐलेक्स कैरी ऐसे 11वें खिलाड़ी बने हैं जिसके साथ स्टीव स्मिथ ने टेस्ट क्रिकेट में डबल सेंचुरी पार्टनरशिप की है और वह इतने खिलाड़ियों के साथ दोहरी शतकीय साझेदारी करने वाले दुनिया के एकमात्र खिलाड़ी हैं। एक नजर स्टीव स्मिथ के साथ डबल सेंचुरी पार्टनरशिप करने वाले खिलाड़ियों पर डालें तो इस लिस्ट में सबसे पहला नाम पूर्व कप्तान माइकल क्लार्क का है, इस पूर्व खिलाड़ी के साथ स्टीव स्मिथ ने 2013 में पहली दोहरी शतकीय साझेदारी की थी। वहीं एडम वोगेस, शॉन मार्श और उस्मान ख्वाजा के साथ स्टीव स्मिथ ये कारनामा 2-2 देशों के खिलाफ कर चुके हैं। ट्रेविस हेड के साथ तो उन्होंने भारत के खिलाप दो बार दोहरी शतकीय साझेदारी की है।

वर्ल्ड कप विजेता टीम इंडिया को मिली डायमंड रिंग

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने पिछले साल 2024 में टी20 वर्ल्ड कप का खिताब अपने नाम किया था। रोहित शर्मा की अगुवाई में टीम इंडिया की जीत के बाद विक्ट्री परेडा का आयोजन हुआ। इसके बाद खिलाड़ियों को अवॉर्ड शो में भी सम्मानित किया गया था। बीसीसीआई ने हाल ही में नमन ऑवर्ड्स का आयोजन किया था। इस दौरान टीम इंडिया के खिलाड़ियों को हीरे की अंगूठी गिफ्ट की गई । ये अंगूठी काफी महंगी है। बीसीसीआई ने शुक्रवार को एक वीडियो शेयर किया। ये नमन अवॉर्ड्स का है। इसमें खिलाड़ियों को अंगूठी को दिखाया गया है। बीसीसीआई ने एक्स पर वीडियो शेयर करते हुए एक्स पर लिखा कि, टीम इंडिया को सम्मानित करते हुए उन्हें चैंपियंस रिंग दी गई। इस अंगूठी की सबसे बड़ी और पहली खासियत तो यही है कि ये चैंपियंस की रिंग है। इसके साथ-साथ इसे बहुत ही खास तरीके से डिजाइन किया गया है। रिंग पर हर खिलाड़ी का नाम लिखा गया है। रोहित शर्मा को जो रिंग मिली उस पर उनका नाम और जर्सी नंबर लिखा हुआ है। इसके साथ ही खिलाड़ियों के रनों को भी अंकित किया गया है। टीम इंडिया के खिलाड़ियों को मिली डायमंड रिंग काफी महंगी है। इसका सबसे बड़ा कारण ये है कि ये हीरे की बनी हुई है। दूसरा कारण ये है कि इसे बहुत ही खास तरह से डिजाइन किया गया है। टीम में शामिल हर खिलाड़ी को उसी के नाम की अंगूठी मिली है।

स्टीव स्मिथ ने तोड़ा सचिन तेंदुलकर का रिकॉर्ड

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के दिग्गज खिलाड़ी स्टीव स्मिथ और एलेक्स कैरी ने श्रीलंका के खिलाफ दूसरे टेस्ट मैच में शतक लगाया। स्मिथ ने पहले सेंचुरी पूरी की इसके बाद कैरी ने भी शतक जड़ा। ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी कैरी ने टेस्ट करियर का दूसरा शतक लगाया। इस दौरान खबर लिखे जाने तक ऑस्ट्रेलिया ने तीन विकेट के नुकसान पर 324 रन बना लिए हैं। स्टीव स्मिथ ने सचिन तेंदुलकर का एक बड़ा रिकॉर्ड तोड़ दिया है। वे सबसे कम टेस्ट पारियों में 36 शतक लगाने वाले दूसरे खिलाड़ी बन गए हैं। स्मिथ ने इसके लिए 206 पारियां खेलीं। जबकि सचिन ने 218 पारियां खेली थीं। इस लिस्ट में रिकी पोंटिंग टॉप पर हैं। पोंटिंग ने 200 पारियों में 36 शतक जड़े। कुमार संगकारा तीसरे नंबर पर हैं। उन्होंने 210 पारियों में कमाल किया था। स्टीव स्मिथ सबसे तेज 17 हजार इंटरनेशनल रन पूरे करने वाले खिलाड़ियों की लिस्ट में शामिल हो गए हैं। उन्होंने 410 पारियों में ये कमाल किया। स्मित इस लिस्ट में नौवें नंबर पर हैं। जबकि विराट कोहली टॉप पर हैं। टीम इंडिया के दिग्गज खिलाड़ी कोहली ने 363 पारियों में ये कारनामा किया था। हाशिम आमला लिस्ट में दूसरे नंबर पर हैं। उन्होंने 381 पारियों में ये उपलब्धि हासिल की थी।

राष्ट्रीय खेलों में मुक्केबाजी-लवलीना ने जीता स्वर्ण, थापा को रजत से करना पड़ा संतोष

देहरादून (एजेंसी)। तोक्यो ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता लवलीना बोरगोहेन ने 38वें राष्ट्रीय खेलों में महिलाओं की 75 किग्रा स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता जबकि छह बार के एशियाई चैंपियन शिव थापा ने पुरुषों के 63.5 किग्रा वर्ग में रजत पदक हासिल किया। पेरिस ओलंपिक के बाद अपना पहला टूर्नामेंट खेल रही असम की लवलीना ने तीनों दौर में चंडीगढ़ की युवा प्रतिद्वंद्वी प्रांशु राठौड़ पर एकतरफा 5-0 की जीत दर्ज की। थापा को पुरुषों के लाइट वेल्टरवेट (63.5 किग्रा) वर्ग के फाइनल में निराशा का सामना करना पड़ा।

उन्हें सेना खेल संवर्धन बोर्ड के मुक्केबाज वंशज से करीबी मुकाबले में 4-3 से हराया।

राष्ट्रमंडल खेलों की कांस्य पदक विजेता सेना की जैस्मिन लम्बोरिया ने महिलाओं की 60 किग्रा स्पर्धा में विश्व चैंपियनशिप की कांस्य विजेता हरियाणा की मनीषा मौन पर 5-0 से जीत के साथ अपना दबदबा कायम किया। सेना के लिए एक और स्वर्ण पदक साक्षी ने जीता। उन्होंने हिमाचल प्रदेश की विनाक्षी को 5-0 से हराया।

दिन के अन्य मुकाबलों में सेना के मंडेंगबाम सिंह ने पुरुषों के फ्लाईवेट (51 किग्रा) वर्ग में चंडीगढ़ के

अंशुल पूनिया को 4-1 खंडित फैसले से हराया। महिलाओं के बैंटमवेट वर्ग में मध्य प्रदेश की दिव्या पंवार ने उत्तर प्रदेश की सोनिया लाठेर को 4-1 से शिकस्त दी।

स्थानीय मुक्केबाज निवेदिता कार्की ने हरियाणा की कल्पना को हराकर महिलाओं की फ्लाईवेट (50 किग्रा) स्पर्धा में शीर्ष स्थान हासिल किया। पूर्व युवा विश्व चैंपियन असम की अंकुशिता बोरो ने महिलाओं की वेल्टरवेट (66 किग्रा) स्पर्धा में उत्तराखंड की काजल को सर्वसम्मत फैसले से शिकस्त देकर स्वर्ण पदक अपने नाम किया।

मोहम्मद अजहरुद्दीन क्रिकेटर बनने से लेकर संसद तक दिलचस्प रहा है जीवन

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट के दबंग खिलाड़ी मोहम्मद अजहरुद्दीन आज अपना 62 वां जन्मदिन मना रहे हैं। 8 फरवरी 1963 को जन्मे मोहम्मद अजहरुद्दीन के जीवन के कई किरदार रहे। वो एक स्टाइलिश क्रिकेटर रहे तो उन पर फिक्सिंग के संगीन आरोप भी लगे। इन सबसे बढ़कर उन्होंने राजनेता बनकर देश की संसद का भी रुख किया। अजहर की प्रोफेशनल लाइफ में जितनी सरगर्मियां दिखी, उतनी ही अफरा-तफरी उनकी निजी जिंदगी में भी मचती नजर आई। हालांकि, इन सबसे गुजरने के बाद आज जिस एक चीज के लिए जमाना उन्हें सबसे ज्यादा याद करता है वो है उनकी क्रिकेट और उनके बनाए रिकॉर्ड्स।

टीम इंडिया के पूर्व कप्तान अजहरुद्दीन ने वनडे से पहले टेस्ट में डेब्यू कर लिया था। उन्होंने अपना पहला टेस्ट मैच दिसंबर 1984 में ईडन गार्डन्स पर खेला था। इंग्लैंड के खिलाफ अपने डेब्यू टेस्ट की पहली पारी में ही उन्होंने शतक जड़ दिया था। इसके बाद दूसरा टेस्ट खेला तो वहां भी शतक जड़ा। यहां तक कि करियर के लगातार तीसरे टेस्ट मैच में भी अजहर ने शतक ठोक दिया और इस तरह वो ऐसा करने वाले आज भी दुनिया के पहले बल्लेबाज हैं।

अजहर ने साल 2000 में साउथ अफ्रीका के खिलाफ बेंगलुरु में अपना आखिरी टेस्ट खेला। उन्होंने उस मैच की दूसरी पारी में भी शतक जमाया। अजहर ने तब 102 रन बनाए थे। इस शतक के साथ उन्होंने एक और नया इतिहास रचा। वो भारत के इकलौते ऐसे बल्लेबाज बने जिन्होंने अपने डेब्यू और आखिरी दोनों टेस्ट में शतक जड़ा। ऐसा करने वाले वो दुनिया के 5 बल्लेबाजों में शामिल हैं।

मोहम्मद अजहरुद्दीन ने अपने करियर में 99 टेस्ट मैच खेले, जिसमें उन्होंने 6215 रन बनाए और 22 शतक लगाए। उनका 100वां टेस्ट खेलने का सपना अधूरा रहा क्योंकि उन पर लगे फौक्सिंग के आरोपों में उनका करियर तबाह हो गया।

उनकी बल्लेबाजी तो कमाल थी ?ही, कप्तानी में भी वे बेमिसाल थे, लेकिन उनकी फील्डिंग जितनी फूर्तीली थी, उस वक्त उनकी बराबरी कुछ ही खिलाड़ी कर पाते थे। जब अजहर ने इंटरनेशनल क्रिकेट खेलना बंद किया तब तक वे 156 कैच पकड़ चुके थे। उनके सामने भारत के ही नहीं, बल्कि दुनिया का भी कोई क्रिकेट नहीं था। उस वक्त दूसरे नंबर पर एलेन बॉर्डर थे, जिनके नाम 127 कैच थे।

हालांकि, बाद में दुनियाभर में फील्डिंग का स्तर बढ़ा और अजहर ये रिकॉर्ड भी ध्वस्त हो गया। अजहरुद्दीन ने तीन वनडे विश्व कप में भारतीय टीम की कमान संभाली, हालांकि ये बात और है कि एक भी बार भारतीय टीम विश्व कप जीतना तो दूर उसके करीब तक नहीं पहुंच पाई। साल 1996 के विश्व कप में टीम इंडिया सेमीफाइनल तक पहुंची थी, लेकिन वहां श्रीलंका से हारकर भारतीय टीम बाहर हो गई और विश्व कप जीतने का सपना भी अधूरा रह गया।

अजहर ने संगीता से शादी के लिए पहली पत्नी नौरीन को तलाक दे दिया था। उस वक्त अजहर को तलाक के हर्जाने के रूप में नौरीन को करीब 1 करोड़ रुपए देने पड़े थे।

उस वक्त इसे देश का सबसे महंगा तलाक माना गया था। अजहर से तलाक के बाद नौरीन ने कनाडा बेस्ड बिजनेसमैन से शादी कर ली। अजहर-संगीता के बीच 14 साल का रिश्ता 2010 में तलाक के साथ खत्म हो गया।

शोएब अख्तर ने की भविष्यवाणी, बताया भारत-पाकिस्तान के साथ ये टीम होगी सेमीफाइनल में

नई दिल्ली (एजेंसी)। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 से पहले क्रिकेट के दिग्गज अपनी-अपनी भविष्यवाणी करने लगे हैं। इस कड़ी में पाकिस्तान के पूर्व तेज गेंदबाज शोएब अख्तर ने टूर्नामेंट की सेमीफाइनलिस्ट टीमों को लेकर बड़ी भविष्यवाणी कर दी है। उनका कहना है कि भारत और पाकिस्तान तो नॉक आउट स्टेज में पहुंचेगी, अगर अफगानिस्तान की टीम बेहतर प्रदर्शन करती है तो वो भी सेमीफाइनल का टिकट हासिल कर सकती है। बता दें कि, पिछले दो आईसीसी टूर्नामेंट में अफगानिस्तान का प्रदर्शन लाजवाब रहा है। टी20 वर्ल्ड कप में टीम सेमीफाइनल तक का सफर तय करने में कायमाब रही थी, वहीं वर्ल्ड कप 2023 में टीम ने 9 में से 4 मैच जीते थे, जिसमें उन्होंने इंग्लैंड, पाकिस्तान और श्रीलंका जैसी टीमों को हार का स्वाद चखाया था। क्रिकेट पाकिस्तान के अनुसार शोएब अख्तर ने दुबई में मीडिया से कहा कि, अगर अफगानिस्तान की टीम इस इवेंट के दौरान मैच्योरिटी दिखाती है, तो वे सेमीफाइनल में जगह बना सकती है। मेरा मानना है कि पाकिस्तान, भारत और अफगानिस्तान 2025 चैंपियंस ट्रॉफी के सेमीफाइनल में पहुंचेंगे।

इसके अलावा रावलपिंडी एक्सप्रेस के नाम से मशहूर इस खिलाड़ी ने एक और बड़ी भविष्यवाणी की, उनका कहना है कि 23 फरवरी को होने वाले इंडिया वर्सेस पाकिस्तान मुकाबले में उनकी टीम भारत को भारत को रौंद देगी और फाइनल में एक बार फिर फैंस को उन्होंने आगे कहा कि, अगर अफगानिस्तान की टीम मैच्योरिटी दिखाए और उसके बल्लेबाज धैर्य दिखाएं तो वे हैरान कर देने वाले रिजल्ट दे सकते हैं।

शोएब अख्तर ने कहा कि, मुझे उम्मीद है कि पाकिस्तान 23 फरवरी को भारत को हरा देगा। वास्तव में, मेरा मानना है कि पाकिस्तान और भारत दोनों को टूर्नामेंट के फाइनल में भी भिड़ना चाहिए।

दूसरी बार पिता बने ऑस्ट्रेलियाई कप्तान पैट कमिंस, पत्नी बेकी ने दिया बेटी को जन्म

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के टेस्ट और वनडे टीम के कप्तान पैट कमिंस के घर दूसरी बार किलकारियां गूंजी है। उनकी पत्नी रेबेका ने नन्ही परी को जन्म दिया है। कपल ने अपनी बेटी का नाम एडी रखा है। वहीं इस कपल ने सोशल मीडिया के जरिए ये जानाकारी दी है। बेकी ने अपनी नवजात बेटी के साथ एक तस्वीर इस दौरान शेयर करते हुए लिखा कि, वह आ गई है। हमारी खूबसूरत बच्ची एडी... हम शब्दों में बयां नहीं कर सकते है कि हम इस समय कितने खुश और प्यास से भरे हुए हैं। बता दें कि, ऑस्ट्रेलियाई टीम इस समय श्रीलंका दौरे पर हैं और कप्तान पैट कमिंस पैटरनिटी लीव पर हैं। वह क्रिकेट के साथ-साथ अपने परिवार को भी प्राथमिकताा देना चाहते हैं। कमिंस अपने पहले बच्चे एल्बी के जन्म के दौरान भी अपनी पत्नी के साथ नहीं थे तो इस बार उन्होंने इस खास पल के दौरान पूरा समय अपनी पत्नी के साथ गुजारने की इच्छा जताई थी। कमिंस ने अक्टूबर में कहा था कि, पिछली बार मैं एक बड़ा हिस्सा चूक गया था और मैं इस बार शुरुआती समय में घर पर थोड़ा और समय बिताने के तरीके पर काम करना चाहता हूं। उन्होंने साथ ही कहा था कि, अगर किसी को अपने परिवार को प्राथमिकता देनी पड़े तो कोई भी व्यक्ति इस बात पर ध्यान नहीं देगा। हम क्रिकेट खेल रहे हैं। ये दुनिया का अंत नहीं है, इसलिए हम चाहते हैं कि लोग ऑस्ट्रेलिया के लिए लंबा, सफर करियर बनाएं और आप उनसे ये नहीं कह सकते कि वे अपना जीवन रोककर दुनिया भर की यात्रा करें और बाकी सब कुछ भूल जाएं। जब बात परिवार की आती है तो हम काफी खुले हैं।

टी20 में फेल होने के बाद अब रणजी ट्रॉफी खेलेंगे सूर्यकुमार यादव

नई दिल्ली (एजेंसी)। सूर्यकुमार यादव भारत की वनडे टीम से बाहर चल रहे हैं। उन्होंने टीम इंडिया के लिए आखिरी वनडे 2023 में खेला था। वहीं वे टी20 फॉर्मेट में कुछ खास नहीं कर सके। अब सूर्या रणजी ट्रॉफी के लिए मैदान पर उतरेंगे। वे मुंबई के लिए रणजी ट्रॉफी 2025 का क्वार्टर फाइनल मैच खेल सकते हैं। सूर्या शुक्रवार को मैदान पर प्रैक्टिस के लिए उतरे। लेकिन सूर्या को कप्तानी नहीं मिलेगी।

रणजी ट्रॉफी 2025 का तीसरा क्वार्टर फाइनल मैच शनिवार से मुंबई और हरियाणा के बीच खेला जाएगा। ये मुकाबला कोलकाता के ईडन गार्डन्स में आयोजित होगा। सूर्या इस मैच की प्लेइंग इलेवन में शामिल हो सकते हैं। वे मुंबई टीम का हिस्सा हैं। सूर्या पिछले काफी वक्त से बल्ले से कमाल नहीं दिखा पाए हैं। लेकिन वे इस मैच के जरिए फॉर्म में आने की कोशिश करेंगे।

सूर्यकुमार यादव मुंबई टीम का हिस्सा हैं और मुंबई के नियमित कप्तान अजिंक्य रहाणे हैं। रहाणे लंबे वक्त से टीम की कप्तानी कर रहे हैं। वे सीनियर खिलाड़ी भी हैं। जबकि सूर्या लगातार इंटरनेशनल क्रिकेट में खेलते हैं। वे टी20 फॉर्मेट में भारत के कप्तान हैं। लिहाजा मुंबई अपने नियमित कप्तान को ही क्वार्टर फाइनल के लिए मौका देगी।

सूर्या ने शुक्रवार को मुंबई टीम के साथ जमकर पसीना बहाया। अगर सूर्यकुमार यादव की पिछले 10 पारियों पर नजर डालें तो इसमें वे लगातार फ्लॉप हुए हैं। सूर्या ने भारत के लिए पांच टी20 मैच खेले।

इस दौरान दो बार जीरो आउट हुए। एक बार 2 रन बनाकर आउट हुए। वहीं राजकोट में 14 रन और चेन्नई में 12 रन बनाकर आउट हुए। सूर्या ने मुंबई के लिए पिछले पांच मैचों में कुछ खास नहीं किया। वे पिछले साल 21 दिसंबर को कर्नाटक के खिलाफ 20 रन बनाकर आउट हुए। इसके बाद 23 दिसंबर को हैदराबाद के खिलाफ 18 रन बनाकर आउट हुए। पंजाब और पुडुचेरी के खिलाफ खाता तक नहीं खोल पाए।

मार्ग में फंसे तीर्थयात्रियों को दिया गया पानी, चाय और भोजन

महाकुंभ पर्व की पुनः बढ़ी भीड, व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के लिए सजग रहा प्रशासन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। प्रयागराज महाकुंभ पर्व में एक बार पुनः तीर्थयात्रियों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है। रीवा-प्रयागराज मार्ग पर 7 फरवरी को रात से ही वाहनों का दबाव बढ़ गया। सुबह होते-होते चाकघाट से प्रयागराज के बीच में वाहनों की गति बहुत धीमी हो गई। जिसके कारण रीवा-प्रयागराज हाइवे पर बड़ी संख्या में वाहन फंस गए। कलेक्टर प्रतिभा पाल पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह ने मौके पर जाकर तीर्थयात्रियों के लिए व्यवस्थाएं सुनिश्चित की। वाहनों को बेला, जोगिनिहाई टोल प्लाजा, श्रीयुत महाविद्यालय गंगेव तथा चाकघाट में रूकने की व्यवस्था की गई। प्रयागराज के अधिकारियों से सतत संपर्क करके थोड़े-थोड़े अंतराल से वाहन छोड़े गए। हाइवे में जिन स्थानों पर वाहन फंसे हुए थे उन स्थानों में प्रशासन की ओर से तीर्थयात्रियों को भोजन, चाय, पानी तथा दवाओं की निःशुल्क व्यवस्था की गई। बेला में आयुक्त नगर निगम सौरभ सोनवड़े, तहसीलदार शिवशंकर शुक्ला, नायब तहसीलदार यतीश शुक्ला तथा पुलिस अधिकारियों ने वाहनों को व्यवस्थित कराया। चाकघाट से मिली सूचनाओं के आधार पर धीरे-धीरे वाहन छोड़े गए।

कलेक्टर तथा पुलिस अधीक्षक ने बेला, जोगिनिहाई टोल प्लाजा, सोहागी चेकपोस्ट, श्रीयुत महाविद्यालय गंगेव तथा चाकघाट में व्यवस्थाओं का जायजा लिया। श्रीयुत महाविद्यालय में अपर कलेक्टर एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सपना त्रिपाठी तथा एसडीएम मनगवां पीएस त्रिपाठी ने पुलिस अधिकारियों के साथ व्यवस्थाएं सुनिश्चित की। यात्रियों को प्रयागराज में वाहनों की स्थिति से अवगत कराकर सुरक्षित स्थान पर विश्राम करके आगे की यात्रा करने की समझाइश दी। कई यात्री गंगेव और मनगवां से प्रयागराज के स्थान पर बनारस की ओर चले गए। श्रीयुत महाविद्यालय परिसर में तीर्थयात्रियों को भोजन और पानी की सुविधा दी गई। चाकघाट रैनबसेरा में भी बड़ी संख्या में तीर्थयात्री रूके हुए हैं। चाकघाट में एसडीएम त्योंथर संजय जैन पुलिस अधिकारियों के साथ तैनात रहकर व्यवस्थाएं सुनिश्चित कर रहे हैं। यात्रियों को निःशुल्क भोजन, पानी, शौचालय तथा उपचार की सुविधा दी जा रही है। रैनबसेरा में बनाए गए मेडिकल कैंप में तीर्थयात्रियों को दवायें दी गईं।

व्यवस्थाएं बनाने में पुलिस ने लगाया पूरा जोर - रीवा-प्रयागराज मार्ग पर वाहनों की भीड़ के कारण यातायात को व्यवस्थित करना बड़ी चुनौती रही। जगह-जगह वाहनों को रोककर यातायात को सुगम बनाने का प्रयास किया गया। पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह के साथ अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अनिल सोनकर, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विवेक लाल, एसडीओपी त्योंथर उदित मिश्रा, एसडीओपी सिरमौर उमेश प्रजापति तथा अन्य पुलिस अधिकारियों ने व्यवस्थाएं बनाने में पूरा जोर लगाया। हाइवे पर लगातार वाहनों की निगरानी की जा रही है। प्रयागराज के अधिकारियों से संपर्क करके वाहनों को प्रयागराज के लिए छोड़ा जा रहा है। प्रयागराज जाने के लिए अभी भी आन्ध्रप्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, महाराष्ट्र तथा छत्तीसगढ़ से बड़ी संख्या में वाहन लगातार आ रहे हैं। प्रशासनिक और पुलिस अधिकारी व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के लगातार प्रयास कर रहे हैं। तीर्थयात्रियों को प्रशासन के साथ-साथ स्वसहायता समूह, सामाजिक संगठन तथा निजी संस्थाओं द्वारा भी भोजन, पानी, चाय आदि के रूप में सहयोग किया जा रहा है। चाकघाट में युवाओं की टीम ने तीर्थयात्रियों को उनके वाहनों में जाकर निःशुल्क चाय और पानी का वितरण किया। मनगवां में डीबीएल कंपनी की ओर से तीर्थयात्रियों को नाश्ता, भोजन और पानी के पैकेट वितरित कराए गए। आमजनों ने भी तीर्थयात्रियों का यथाशक्ति सहयोग किया। चाकघाट में जल निगम तथा पीएचई विभाग के कर्मचारियों ने तीर्थयात्रियों को भोजन के पैकेट वितरित किए।

सामूहिक विवाह कार्यक्रम में 362 जोड़े दांपत्य सूत्र में बंधे

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि मुख्यमंत्री कन्यादान योजना गरीब परिवारों के लिए वरदान है। गरीब बच्चियों की शादी की समस्त जिम्मेदारी सरकार की होती है, प्रशासन द्वारा सभी व्यवस्थाएं की जाती हैं और धूमधाम से कन्याओं का विवाह/निकाह होता है। रीवा में आयोजित सामूहिक विवाह कार्यक्रम में 362 जोड़े दांपत्य सूत्र में बंधे जिन्हें उप मुख्यमंत्री ने शुभकामना दीं।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने कहा कि यह सरकार गरीबों, किसानों, बेटियों, युवाओं की सरकार है। हर वर्ग की भलाई के लिए विभिन्न योजनाएं संचालित की जा रही हैं। मुफ्त अनाज, निःशुल्क इलाज की सुविधा के साथ ही पक्के आवास व हर घर में जल पहुंचाने का का प्राथमिकता से किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी जी द्वारा आगामी वर्षों में तीन करोड़ प्रधानमंत्री आवास बनाकर गरीबों को दिए जाएंगे। शुक्ल ने कहा कि आज के सामूहिक विवाह कार्यक्रम में प्रदेश सरकार द्वारा 18 लाख रुपए खर्च किए गए हैं तथा प्रति जोड़े 49 हजार रुपए के मान से लगभग एक करोड़ 75 लाख रुपए बेटियों को दिए जा रहे हैं। उन्होंने नवयुगलों को नवीन जीवन की शुभकामनाएं दीं। शुक्ल ने कहा कि प्रदेश में मातृ व शिशु मृत्यु दर को कम किए जाने में सभी को सहभागी बनना होगा। सभी लोग नियमित अपने स्वास्थ्य की जाँच कराएं। अल्ट्रासाउंड जाँच कराकर माँ व बच्चे सुरक्षित रहें। उन्होंने अपेक्षा की कि एएनएम व आशा कार्यकर्ता अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करें और सभी मिलकर स्वस्थ रीवा, स्वस्थ मध्यप्रदेश और स्वस्थ देश बनाने में सहभागी बनें। इस दौरान जिला पंचायत अध्यक्ष नीता कोल, भाजपा जिला अध्यक्ष वीरेन्द्र गुप्ता, अध्यक्ष नगर निगम व्यंकटेश पाण्डेय, जनप्रतिनिधिगण, संयुक्त संचालक सामाजिक न्याय अनिल दुबे सहित बड़ी संख्या में नवविवाहित जोड़े तथा उनके परिजन उपस्थित रहे।

सहकारी समिति बेलवा पैकान के निर्वाचन का कार्यक्रम तय

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मुख्यमंत्री कृषक उत्पादक सहकारी समिति बेलवा पैकान के निर्वाचन के लिए नियुक्त रिटर्निंग आफीसर वरिष्ठ सहकारी निरीक्षक केएस मरावी ने बताया है कि समिति के निर्वाचन का कार्यक्रम तय कर दिया गया है। समिति के संचालक मण्डल में कुल 11 सदस्य चुने जाएंगे। इनमें से 9 अनारक्षित एक अनुसूचित जाति तथा एक अनुसूचित जनजाति वर्ग का होगा। इन सदस्यों में ही अनारक्षित वर्ग में दो पद महिलाओं से चुने जाएंगे। निर्वाचन के लिए नामांकन पत्र 11 फरवरी को दोपहर 12 बजे से दोपहर 2 बजे तक समिति कार्यालय बेलवा पैकान में दाखिल किए जाएंगे। नामांकन पत्रों की जांच 11 फरवरी को ही दोपहर 2 बजे से की जाएगी। उम्मीदवार 13 फरवरी को दोपहर एक बजे तक अपने नाम वापस ले सकते हैं। नाम वापसी की समय सीमा समाप्त होने के बाद उम्मीदवारों की सूची का प्रकाशन कर उन्हें चुनाव प्रतीक आवंटित किए जाएंगे। समिति की विशेष साधारण सम्मिलन 19 फरवरी को आयोजित किया गया है।

उप मुख्यमंत्री ने नैकहाई शौर्य स्मारक में निर्माण कार्यों का किया लोकार्पण व भूमिपूजन

शहीदों की यशभूमि आने वाली पीढ़ी को राष्ट्रप्रेम का संदेश देगी

नैकहाई शौर्य स्मारक के पुनरूद्धार व सौन्दर्यीकरण के कार्य एक वर्ष में पूर्ण होंगे

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि शहीदों की यशभूमि आने वाली पीढ़ी को राष्ट्रप्रेम का संदेश देगी। यह भूमि आने वाली पीढ़ी को अमर बलिदानियों के शहादत को याद रखने का मार्ग प्रशस्त करेगी। शुक्ल ने रीवा शहर में स्थित शौर्य भूमि नैकहाई में 1703 के बुंदेला युद्ध एवं 1796 के पेशवा युद्ध के अमर बलिदानियों के पुण्य स्मरण समारोह संगम तीर्थ की बाउण्ड्रीवॉल प्रवेश एवं निर्गम द्वार का लोकार्पण किया। उन्होंने इस अवसर पर छतरियों के जीर्णोद्धार, कीर्ति स्तंभ, संग्रहालय, बाबड़ी एवं मंदिर निर्माण कार्य का भूमिपूजन करते हुए निर्देश दिए कि सभी कार्य आगामी एक वर्ष में पूर्ण कर लिए जाएं। उप मुख्यमंत्री ने लगभग 75 लाख रुपए के निर्माण कार्यों का लोकार्पण तथा एक करोड़ 25 लाख रुपए के निर्माण कार्यों का भूमिपूजन किया। उ प मुख्यमंत्री ने कहा कि किसी भी कार्य को करने के लिए राजनैतिक इच्छाशक्ति आवश्यक होती है। शहीदों की पुण्यभूमि के पुनरूद्धार के लिए लालबहादुर सिंह व बृहस्पति सिंह ने प्रयास किए और आने वाले वर्ष में 8 फरवरी 2026 को यह शौर्य स्मारक पूर्णतः सौन्दर्यीकृत व सुसज्जित होकर इतिहास की कहानी बखान करेगा जिससे यहाँ आने वाले लोगों को प्रेरणा मिलेगी। उन्होंने कहा कि रीवा में पर्यटकों को इस वीर भूमि के दर्शन होंगे जहाँ महारानी कुंदन कुमारी के नेतृत्व में वीरता का इतिहास अंकित हुआ था जिसे चिरस्थाई बनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि बुजुर्गों और महान व्यक्तियों के शुभ आशीर्वाद से रीवा विकास के मार्ग पर आगे बढ़ रहा है। हमें अपने पितरों की पूजा अर्चना करनी चाहिए क्योंकि इन्हीं के आशीर्वाद से सुख समृद्धि व विश्वास आता है। शुक्ल ने कार्यक्रम में अमर बलिदानियों का पुण्य स्मरण करते हुए उनकी शहादत को नमन किया।

कार्यक्रम में स्वागत उद्बोधन देते हुए पूर्व जनपद अध्यक्ष लाल बहादुर सिंह ने नैकहाई इतिहास की जानकारी दी तथा उप मुख्यमंत्री जी को शौर्य स्मारक के पुनरूद्धार कार्य के लिए साधुवाद दिया। कार्यक्रम का संचालन रविनंदन सिंह ने किया तथा आभार प्रदर्शन सत्येन्द्र शुक्ला द्वारा किया गया। कार्यक्रम में रामपाल सिंह, जिला भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र गुप्ता, अध्यक्ष नगर निगम व्यंकटेश पाण्डेय, निर्मला बहन, एमपीआईडीसी के ईडी यूके तिवारी, केके गर्ग, हाउसिंग बोर्ड के अधिकारीगण तथा शहीद परिवारों के परिजन, रिटायर्ड फौजी व स्थानीयजन उपस्थित रहे। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री ने शहीदों के परिजनों का सम्मान किया।

263 लाख रुपए से निर्मित विद्युत उपकेन्द्र का किया लोकार्पण

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने उद्योग विहार चोरहटा में 263 लाख रुपए की लागत से निर्मित 33/11 केव्ही विद्युत उपकेन्द्र का लोकार्पण किया जिसकी क्षमता पाँच व्हीए है। इस अवसर पर शुक्ल ने कहा कि आद्योगिक केन्द्र में विद्युत सब स्टेशन के निर्माण से उद्योगों को पर्याप्त वोल्टेज की विद्युत आपूर्ति होगी। हमारी सरकार का संकल्प है कि इंडस्ट्रियल एरिया में उच्च गुणवत्ता का वोल्टेज मिले तथा चौबीसों घंटे विद्युत की निरंतरता रहे। उन्होंने कहा कि आरडीएसएस योजना के तहत फीडर सेपरेशन के कार्य व सबस्टेशन निर्माण के कार्य कराए जा रहे हैं ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में चौबीसों घंटे विद्युत मिले। साथ ही शहरी व औद्योगिक क्षेत्रों में भी भरपूर वोल्टेज के साथ विद्युत की आपूर्ति हो। शुक्ल ने कहा कि औद्योगिक क्षेत्र रीवा में सब स्टेशन के निर्माण से इस क्षेत्र को बड़ी उपलब्धि मिली है। हमारा प्रयास है कि स्थितियों को बेहतर से बेहतर बनाया जाए। इसी क्रम में सभी आवश्यक कार्य प्राथमिकता से कराए जा रहे हैं।

इस अवसर पर सांसद जनार्दन मिश्र ने कहा कि केन्द्र व राज्य सरकार मिलकर विकास के कार्यों को प्राथमिकता से पूर्ण कर रही है। केन्द्र सरकार के सहयोग से राज्य स्तर पर विकासात्मक कार्य रीवा में भी किए जा रहे हैं। उन्होंने अधिकारियों से अपेक्षा की कि समर्पण भाव से कार्य करें तथा प्रदेश को विकसित राज्य बनाने व योजनाओं का पात्र व्यक्तियों तक लाभ पहुंचाने को प्राथमिकता दें। इस दौरान अधीक्षण यंत्री विद्युत मण्डल बीके शुक्ला ने अतिथियों का स्वागत करते हुए सब स्टेशन के विषय में प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में अध्यक्ष नगर निगम व्यंकटेश पाण्डेय, एमपीआईडीसी के ईडी यूके तिवारी सहित जनप्रतिनिधिगण, गणमान्य नागरिक तथा उद्यमी उपस्थित रहे।

राज्य स्तरीय बॉडी बिल्डिंग चैंपियनशिप में रीवा के अनुज ने जीता ब्रॉन्ज मेडल

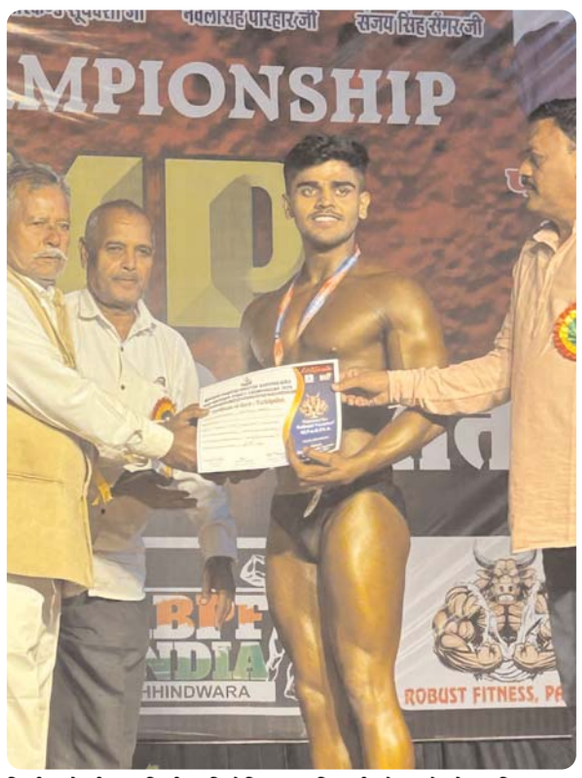

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा के अनुज मिश्रा ने राज्य स्तरीय बॉडी बिल्डिंग एवं मेन्स फिजिक चैंपियनशिप में ब्रॉन्ज मेडल जीत कर जिले का नाम रोशन किया है। यह मेडल उन्हें सीनियर टाल बॉडी बिल्डिंग कैटेगरी में मिला है। इसके साथ ही अनुज का चयन राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता के लिए हुआ है, जो मार्च में बेंगलुरु में आयोजित होगी। यह उपलब्धि कोच राहुल सरीन के मार्गदर्शन में मिली है। द्वारिका नगर के रहने वाले अनुज के पिता ज्ञाननिधि मिश्रा और माता डॉक्टर संगीता मिश्रा हैं। अनुज की इस उपलब्धि पर उनके परिजनों एवं मित्रों ने हर्ष व्यक्त किया है। बतादें कि, छिंदवाड़ा के परासिया में मंगलवार को राज्य स्तरीय बॉडी बिल्डिंग एवं मेन्स फिजिक चैंपियनशिप का आयोजन किया गया। जहां अलग-अलग वर्ग में प्रतिभागियों ने मंच पर आकर अपने शरीर सौष्ठव का प्रदर्शन किया। फिजिक चैंपियन और मिस्टर एमपी खिताब के अलावा प्रतिभागियों को अलग-अलग विधाओं के लिए पुरस्कृत किया गया। आयोजन में अंतर्राष्ट्रीय बॉडी बिल्डर सैय्यद सिद्धीक ने भी प्रस्तुति दी। प्रतियोगिता के पूर्व नगर में रोड शो का आयोजन हुआ। जिसमें प्रदेश भर से आए प्रतिभागी रोड शो में शामिल हुए। आयोजन रोबस्टर फिटनेस परासिया द्वारा किया गया।

एआई पर राष्ट्रीय सेमिनार में उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा

सेमिनार के माध्यम से बच्चों को अपडेट व अपग्रेड होने के अवसर मिलेंगे

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता - अवसर एवं चुनौतियाँ विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार बच्चों को अपडेट व अपग्रेड होने के अवसर उपलब्ध कराएगी। सेमिनार में सीखी गई बातों से छात्र भविष्य में आने वाली चुनौतियों का कुशलतापूर्वक मुकाबला कर सकेंगे। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल शासकीय कन्या महाविद्यालय रीवा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता - अवसर एवं चुनौतियाँ विषय पर आयोजित दो दिवसीय सेमिनार के समापन अवसर पर अपने विचार व्यक्त कर रहे थे।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि एआई भविष्य की दुनिया है। इसे आधार मानकर आयोजित किया गया सेमिनार विद्यार्थियों को व्यापार, उद्योग, रोजगार एवं अर्थव्यवस्था जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आने वाली चुनौतियों का सामना करने में मददगार साबित होगा। उन्होंने सेमिनार आयोजन के लिए आयोजकों की प्रशंसा की तथा कहा कि महाविद्यालयों व विद्यालयों में ऐसे सेमिनार लगातार होने चाहिए ताकि इनका लाभ आने वाली पीढ़ी को मिल सके। उन्होंने कहा कि सफर में धूप तो होगी अगर निकल सको तो चलो, यहाँ कोई किसी को रास्ता नहीं देता अपने आप को बदल सको तो चलो। श्री शुक्ल ने युवा पीढ़ी का आह्वान किया कि देश को विश्वगुरू बनाने में सहभागी बनें। कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष नीता कोल, जिला भाजपा अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र गुप्ता, महाविद्यालय की प्राचार्य श्रीमती विभा श्रीवास्तव सहित प्राध्यापकगण और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

बोर्ड परीक्षाओं में नहीं लगेगी अशासकीय स्कूल के शिक्षकों की ड्यूटी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले में निर्धारित परीक्षा केन्द्रों में माध्यमिक शिक्षा मण्डल की कक्षा 12वीं की बोर्ड परीक्षा 25 फरवरी से तथा 10वीं की बोर्ड परीक्षा 27 फरवरी से आरंभ हो रही है। अध्यक्ष माध्यमिक शिक्षा मण्डल द्वारा बोर्ड परीक्षाओं में परीक्षा कक्षों में अशासकीय स्कूल के शिक्षकों की ड्यूटी न लगाने के निर्देश दिए गए हैं। इस संबंध में जिला शिक्षा अधिकारी सुदामालाल गुप्ता ने कहा है कि सभी विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी तथा बोर्ड परीक्षाओं के केन्द्राध्यक्ष परीक्षा केन्द्र के कक्षों में अशासकीय शिक्षकों की ड्यूटी न लगाएं। प्रत्येक परीक्षा कक्ष में 20 परीक्षार्थियों पर एक पर्यवेक्षक के मान से परीक्षा में शिक्षकों की ड्यूटी लगाएं। हर परीक्षा केन्द्र में कम से कम तीन शिक्षक रिजर्व ड्यूटी में अनिवार्य रूप से रखें। जिन अशासकीय स्कूलों में परीक्षा केन्द्र बनाए गए हैं उनमें भी स्थानीय सहायक केन्द्राध्यक्ष के रूप में अशासकीय शिक्षक की ड्यूटी न लगाएं।

उप मुख्यमंत्री आज दुर्मनकूट में करेंगे ब्रम्हर्षि देवरहा बाबा की प्रतिमा का महाभिषेक

रीवा (निप्र)। गुढ़ तहसील के दुआरी गांव में स्थित दुर्मनकूट में ब्रम्हर्षि देवरहा बाबा की प्रतिमा का प्राण-प्रतिष्ठा समारोह 9 फरवरी को आयोजित किया जा रहा है। समारोह के मुख्य अतिथि उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल दोपहर 12 बजे ब्रम्हर्षि देवरहा बाबा की प्रतिमा का महाभिषेक करेंगे। समारोह की अध्यक्षता विधायक गुढ़ नागेन्द्र सिंह करेंगे। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में सांसद जनार्दन मिश्र तथा जिलाध्यक्ष भाजपा वीरेन्द्र गुप्ता शामिल होंगे।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।